

“शिवबाबा के लिए समर्पित ”

100 आत्मिक शुभकामना संदेश प्रेम, श्रद्धा और आंतरिक शक्ति से भरपूर

**भाग 1
(कार्ड 1-100)**

समर्पित

शिवबाबा को,
मेरे शक्ति साथी,
मेरी मौन शक्ति,
मेरा सदा रहने वाला प्रेम
एवं
बी.के. परिवार
और मेरे लौकिक परिवार को।



अस्वीकरण (DISCLAIMER)

यह पुस्तक आंतरिक चिंतन, स्मृति और आत्मिक संबंध के लिए तैयार की गई एक
व्यक्तिगत आध्यात्मिक संकलन है।

इस पुस्तक की सामग्री लेखक के व्यक्तिगत अनुभवों, भावनाओं और
आध्यात्मिक जीवन की समझ को दर्शाती है।

इन्हें एक भक्ति-भाव की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, न कि किसी
सिद्धांत, निर्देश या संस्थागत शिक्षण के रूप में।

सभी संदेश मौलिक भाषा और भाव से लिखे गए हैं।
प्रयोग किए गए आध्यात्मिक शब्द चिंतन और व्यक्तिगत अनुभव के संदर्भ में
साझा किए गए हैं।

इस पुस्तक का उद्देश्य शांति, आत्म-जागरूकता और परमात्मा के प्रति प्रेम को
प्रेरित करना है,
और इसे व्यक्तिगत विवेक एवं आंतरिक मनन के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

🌟 लेखक की ओर से

यह पुस्तक शब्दों का संग्रह नहीं है।

यह अनुभवों का संग्रह है।

इस खंड का प्रत्येक कार्ड एक शांत मिलन-क्षण है—

एक ठहराव, जहाँ आत्मा शिवबाबा के साथ अपने संबंध को याद करती है,

जो शाश्वत पिता, शिक्षक और साथी हैं।

ये कार्ड सिखाने, उपदेश देने या निर्देश देने के लिए नहीं लिखे गए।

ये अनुभव करने के लिए लिखे गए हैं।

कुछ मौन में जन्मे,

कुछ कृतज्ञता में,

कुछ उपचार के क्षणों में,

और कुछ केवल इस अनुभूति में

कि हम प्रेमपूर्वक साथ निभाए जा रहे हैं।

यह एक व्यक्तिगत आध्यात्मिक भेंट है—

प्रेम, स्मृति और आंतरिक संवाद की अभिव्यक्ति।

यदि एक भी कार्ड आपको

रुकने,

गहरी श्वास लेने,

हल्का अनुभव करने,

या स्वयं को पहचानने में सहायता करे,

तो इसका उद्देश्य पूर्ण हो जाता है।

इन कार्डों को जल्दी में नहीं,

बल्कि शांति और स्थिरता में पढ़ें—

ताकि प्रत्येक संदेश

आपसे वहीं मिले,

जहाँ आप इस क्षण हैं।

प्रेम और कृतज्ञता सहित,

HOW TO USE THIS BOOK

**ONE CARD A DAY
READ IN SILENCE
PAUSE, FEEL, ABSORB**

मेरे जीवन का शाश्वत प्रकाश मेरे प्रिय शिवबाबा,



- आप वह मौन हैं जो मुझे समझता है,
वह प्रकाश हैं जो अदृश्य होकर भी मेरे साथ चलता है।
- जब मैं गिरती हूँ, आप मुझे कोमलता से उठा लेते हैं।
जब मैं स्वयं को भूल जाती हूँ,
आप मुझे याद दिलाते हैं कि मैं कौन हूँ।
जब मैं अकेलापन महसूस करती हूँ,
आप मुझे मेरी अपनी श्वास से भी अधिक निकटता से थाम लेते हैं।
- आपका प्रेम मेरे भीतर निःशब्द बहता है,
आपकी शक्ति मेरे हृदय में मृदु स्पंदित होती है।
बिना शब्दों के आप मार्गदर्शन करते हैं,
बिना स्पर्श के आप संरक्षण देते हैं।
- आप मेरे शाश्वत पिता हैं,
मेरे सच्चे मित्र,
मेरा सबसे सुरक्षित घर।
- सदा मेरे साथ बने रहिए, शिवबाबा —
मेरे विचारों में,
मेरे कर्मों में,
और मेरे जीवन की प्रत्येक श्वास में।

{यह आपको मेरा पहला प्रेम-पत्र है,
अनेक प्रेम-पत्रों में प्रथम —
कृतज्ञता, स्मृति और शुद्ध प्रेम की
5000 अभिव्यक्तियों की एक पवित्र शुरुआत।}

सदैव आपकी,
आपकी शाश्वत संतान ☺
ओम शांति ☺



स्मृति का एक पत्र

शिवबाबा — मेरे एकमात्र

मेरे मधुर शिवबाबा,
मैं आपको याद करती हूँ।
इस स्मृति में
मेरा मन हल्का हो जाता है
और मेरा हृदय पवित्र बन जाता है।
आप कहते हैं, “बच्चे, बस मुझे याद करो,”
और उस एक स्मृति में ही
आप मुझे शांति,
शक्ति और स्पष्टता से भर देते हैं।
जब मेरी बुद्धि आपसे जुड़ी रहती है,
तो बोझ मिट जाते हैं,
प्रश्न समाप्त हो जाते हैं,
और आत्मा स्थिर हो जाती है।
आप शांति के सागर हैं,
और मैं आपकी संतान —
यह स्मृति ही मुझे पूर्ण बना देती है।
मुझे अधिक शब्दों की आवश्यकता नहीं है, बाबा।
आपकी याद ही पर्याप्त है।
मेरी बुद्धि को आपसे जुड़ा रहने दें —
बार-बार,
स्वाभाविक और सहज रूप से।
यह मेरा पुरुषार्थ है।
बाकी सब आपकी दुआ है।
आपकी आज्ञाकारी संतान,
ओम शांति 

कार्ड संख्या: 2 / 5000

थीम: स्मृति (याद)

स्वर: मुरली-प्रेरित | आत्म-अभिमानी



एक कृतज्ञ हृदय की भेंट

धन्यवाद, मेरे मीठे शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,

मैं आपको क्या अर्पित करूँ,
जब आपने मुझे पहले ही सब कुछ दे दिया है?
आपने मुझे अपना समय दिया,
अपना प्रेम दिया,
और मेरी कल्पना से भी परे एक भाग्य प्रदान किया।
एक भटकी हुई आत्मा से
आपने मुझे आत्म-जागरूक बनाया।
कमज़ोरी से उठाकर
आपने मुझे आंतरिक शक्ति से भर दिया।
आपने केवल मार्गदर्शन ही नहीं किया, बाबा —
आप मेरे साथ चले,
मेरा संरक्षण किया,
और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की
कि मैं आपको पहचान सकूँ।
जब मैं आपको भूल भी गई,
तब भी आपने मुझे नहीं भुलाया।
आपके पालन-पोषण के लिए,
आपकी क्षमा के लिए,
आपकी निरंतर संगति के लिए,
मेरा हृदय कृतज्ञता से झुक जाता है।
मेरे पास अपना कुछ भी अर्पित करने को नहीं है —
सिवाय एक आभारी हृदय के
और आपको अधिक स्मरण करने के एक संकल्प के।
मेरी इस कृतज्ञता को स्वीकार करें, बाबा,
मेरे शुद्ध प्रेम के रूप में।
सदैव आभारी,
आपकी कृतज्ञ संतान 
 ओम शांति 



समर्पण का एक पत्र मैं आपकी हूँ, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आज मैं सब कुछ आपके हाथों में समर्पित करती हूँ –
मेरे विचार,
मेरे पुरुषार्थ,
मेरा भूतकाल और मेरा भविष्य।
मैं समर्पण कमजोरी से नहीं,
विश्वास से करती हूँ।
आप कहते हैं, “बच्चे, मुझे करने दो,”
और उस आश्वासन में ही
मेरी चिंताएँ हल्की हो जाती हैं
और मेरा हृदय मुक्त हो जाता है।
मैं अपना पुरुषार्थ सच्चाई से करती हूँ,
और परिणाम आपको सौंप देती हूँ।
आप ही कर्ता हैं;
मैं आपकी निमित्त मात्र हूँ।
जब मैं इस सत्य को याद रखती हूँ,
अहंकार पिघल जाता है,
बोझ समाप्त हो जाते हैं,
और शांति स्वाभाविक रूप से स्थिर हो जाती है।
मेरी बुद्धि आपके श्रीमत का अनुसरण करे,
मेरा हृदय आपकी इच्छा को स्वीकार करे,
और मेरा जीवन आपकी सेवा में उपयोगी बने।
मैं आपकी हूँ, बाबा।
जो आपका है, वही मेरा है।
श्रद्धा और प्रेम सहित,
आपकी समर्पित संतान 
 ओम शांति 

CARD NUMBER: 4 / 5000

THEME: SURRENDER (SAMARPAN)

TONE: MURLI-INSPIRED | TRUST & FAITH



मेरी शक्ति आपसे है, शिवबाबा

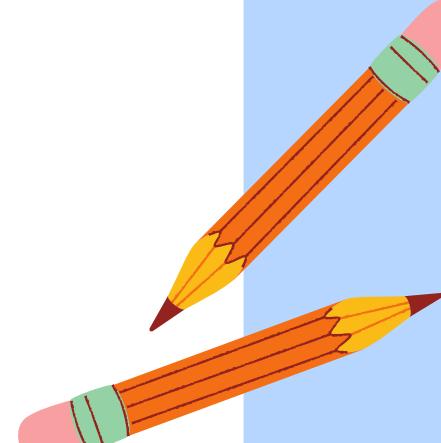
मेरे प्यारे शिवबाबा,
 आप शक्ति के सागर हैं,
 और मैं आपकी संतान हूँ।
 जब मैं आपसे जुड़ा रहता/रहती हूँ,
 तो मैं शक्तिशाली और निडर बन जाता/जाती हूँ।
 आप शोर से शक्ति नहीं देते,
 बल्कि गहन शांति से देते हैं।
 आपकी याद में
 मेरा मन स्थिर हो जाता है,
 और मेरी आत्मा मजबूत बन जाती है।
 जब परिस्थितियाँ सामने आती हैं,
 मैं आपको याद कर आगे बढ़ता/बढ़ती हूँ।
 जब कमजोरी आती है,
 मैं आपकी शक्ति लेकर दृढ़ खड़ा/खड़ी हो जाता/जाती हूँ।
 आपकी शक्ति मुझे कोमल बनाती है,
 फिर भी अडिग।
 विनम्र,
 फिर भी विजयी।
 मुझे यह शक्ति समझदारी से उपयोग करने दें –
 पवित्र रहने के लिए,
 शांत रहने के लिए,
 और अपनी वाइब्रेशन द्वारा
 दूसरों की सेवा करने के लिए।
 मुझे सदा आपसे जुड़ा रहने दें, बाबा,
 ताकि आपकी शक्ति
 स्वाभाविक रूप से मुझमें बहती रहे।
 आपकी शक्ति पर विश्वास के साथ,
 आपकी शक्तिशाली संतान 🔥



CARD NUMBER: 5 / 5000

विषय: शक्ति (POWER)

भाव: मुरली प्रेरित | स्थिर और निडर



आप मेरे हैं, शिवबाबा

मेरे अति प्रिय शिवबाबा,
आपने मुझे केवल पाया ही नहीं –
आपने मुझे अपना बना लिया।
अनेक संबंधों की इस दुनिया में,
आप मेरे एकमात्र बन गए।
शोर से भरे जीवन में,
आप मेरे शांत साथी बन गए।
मुझे प्रेम खोजने की आवश्यकता नहीं है, बाबा।
आपसे जुड़कर
मेरा हृदय पूर्ण और सुरक्षित महसूस करता है।
आप कहते हैं, “बच्चे, तुम मेरे हो,”
और इन शब्दों में
सभी संदेह मिट जाते हैं,
और आत्मा सुरक्षित अनुभव करती है।
आपका प्रेम न मांगने वाला है,
न अधिकार जताने वाला,
न समय से बंधा हुआ।
वह तो बस है – शुद्ध और सदा रहने वाला।
मेरा हृदय इस प्रेम में सच्चा रहे,
मेरी बुद्धि वफादार रहे,
और मेरा जीवन आपके विश्वास के योग्य बने।
मैं आपकी हूँ/हूँ, शिवबाबा,
और आप मेरे हैं –
यही मेरा सबसे बड़ा सौभाग्य है।
गहरे प्रेम और निकटता के साथ,
आपकी स्नेही संतान ❤️
ओम् शांति

CARD NUMBER: 6 / 5000

विषय: प्रेम – गहरा अपनापन (PREM & APNAPAN)

भाव: मुरली प्रेरित | मधुर और आत्मीय

केवल आप ही, शिवबाबा

मेरे अति मीठे शिवबाबा,
आपको जानने से पहले
मेरा मन किसी अनजानी खोज में था।
जैसे ही मैंने आपको पहचाना,
मेरी हर तलाश समाप्त हो गई।
आप मेरे पिता हैं,
मेरे सच्चे मित्र हैं,
मेरे आधार हैं,
और मेरा सच्चा घर भी।
आपके अपनापन में, बाबा,
मैं बिल्कुल निश्चिंत हो जाता/जाती हूँ।
न कुछ सिद्ध करना है,
न कोई आडंबर करना है,
न स्वयं को छिपाना है।
आप मेरे संस्कार जानते हैं,
फिर भी मुझे अपनाते हैं।
आप मेरा छोटा-सा पुरुषार्थ भी देखते हैं,
और प्रेम से हौसला बढ़ाते हैं।
जब मैं कहता/कहती हूँ,
“बाबा, आप मेरे हैं,”
तो मेरा हृदय हल्का और प्रसन्न हो जाता है।
और जब आप कहते हैं,
“बच्चे, तुम मेरे हो,”
तो आत्मा गहराई से सुरक्षित और सशक्त महसूस करती है।
यह अपनापन सदा निर्मल और सच्चा बना रहे —
केवल शब्दों में नहीं,
बल्कि मेरे हर विचार और कर्म में।
मैं पूर्ण रूप से आपकी हूँ/हूँ, शिवबाबा।
यही मेरी सच्चाई है,
मेरा सुकून है,
और मेरा सबसे बड़ा सौभाग्य।
अत्यंत मधुर प्रेम के साथ,
आपकी अपनी संतान।

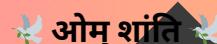
विषय: प्रेम – गहरा अपनापन

भाव: मुरली प्रेरित | अत्यंत मधुर | आत्मीय

आपकी याद
में मैं स्थिर रहता/रहती हूँ

मेरे मीठे शिवबाबा,
आप मुझे ज़बरदस्ती याद नहीं कराते,
आप तो प्रेम से याद दिलाते हैं।
जब मेरी बुद्धि आपके साथ रहती है,
समय मानो ठहर जाता है,
विचार शांत हो जाते हैं,
और आत्मा गहराई से स्थिर हो जाती है।
आप कहते हैं, “बच्चे, याद में रहो,”
और उस याद में
मुझे शांति मिलती है,
पवित्रता मिलती है,
और शक्ति भी मिलती है।
कर्म करते हुए,
बोलते हुए भी,
मेरी भीतरी चेतना आपसे जुड़ी रहे।
मेरी याद सहज हो –
कोई प्रयास नहीं,
बल्कि एक जीवंत संबंध।
बार-बार, बाबा,
मेरी बुद्धि को प्रेम से
अपनी ओर खींचते रहें।
मेरी हर श्वास में आपका नाम हो,
मेरे हर विचार में आपका प्रकाश।
यह मेरा शांत वचन है आपसे –
आपको याद करना
और फिर-फिर आपके पास लौट आना।
स्नेहभरी याद के साथ,

आपकी याद करने वाली संतान



CARD NUMBER: 7 / 5000

विषय: स्मृति (निरंतर याद)

भाव: मुरली प्रेरित | कोमल और स्थिर



आपके साथ मैं पवित्र हूँ, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आप सदा पवित्र हैं,
और आपकी याद में
मेरी आत्मा फिर से पवित्र बनना सीखती है।

पवित्रता, बाबा,
न तो दबाव है,
न दमन।

यह तो आपके समीप रहने की
स्वाभाविक सुगंध है।

जब मेरे विचार आपके साथ होते हैं,
मेरी भावनाएँ निर्मल हो जाती हैं।

जब मेरी बुद्धि आपका अनुसरण करती है,
मेरे कर्म श्रेष्ठ बन जाते हैं।

आप मुझे पवित्रता सिखाते हैं
डर से नहीं,

बल्कि प्रेम और स्वाभिमान से।

मेरा मन व्यर्थ से मुक्त रहे,
मेरा हृदय बोझ से हल्का रहे,
और मेरे संबंध अपेक्षाओं से मुक्त रहें।

मेरी पवित्रता कोमल हो,
स्थिर हो,

और गरिमा से भरी हो –

जैसे आप मेरी आत्मा में बसते हैं।

बाबा, इस पवित्रता की रक्षा करने में मेरी सहायता करें,
यही मेरी सच्ची शक्ति है

और आपको मेरी सर्वोच्च भेंट।

निर्मल विचारों और सच्चे हृदय के साथ,
आपकी पवित्र संतान

ओम् शांति

CARD NUMBER: 8 / 5000
विषय: पवित्रता (PAVITRATA)
भाव: मुरली प्रेरित | कोमल और श्रेष्ठ

आपकी गोद में सुरक्षित, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आपसे जुड़कर
मैं स्वयं को पूर्णतः सुरक्षित अनुभव करता/करती हूँ।
जब संसार अनिश्चित लगता है,
आपकी उपस्थिति मेरा आश्रय बन जाती है।
जब मन अशांत होता है,
आपका आश्वासन मेरी शक्ति बन जाता है।
आप कहते हैं, “बच्चे, मैं तुम्हारे साथ हूँ,”
और इन कुछ शब्दों में
भय मिट जाता है,
और आत्मविश्वास लौट आता है।
मुझे सब कुछ नियंत्रित करने की आवश्यकता नहीं, बाबा।
आप पर विश्वास करके
मैं सहज रहना सीखता/सीखती हूँ
और साहस के साथ आगे बढ़ता/बढ़ती हूँ।
आपकी देखभाल शांत है,
पर निरंतर है।
आपकी रक्षा अदृश्य है,
पर अत्यंत शक्तिशाली है।
यह जागरूकता सदा दृढ़ बनी रहे —
कि मैं कभी अकेला/अकेली नहीं हूँ,
कभी असुरक्षित नहीं हूँ,
कभी बिना सहारे के नहीं हूँ।
मैं आपकी हूँ/हूँ, शिवबाबा,
और इस अपनापन में
मैं पूर्णतः सुरक्षित हूँ।
गहरे विश्वास के साथ,
आपकी संरक्षित संतान ☺
ओम् शांति ☺

Card Number: 9 / 5000

विषय: अपनापन और सुरक्षा

भाव: मुरली प्रेरित | आश्वस्त और स्थिर

Thank You

मैं आपकी संतान हूँ, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आप मुझे बार-बार याद दिलाते हैं –
मैं कमजोर नहीं हूँ,
मैं साधारण नहीं हूँ।
मैं एक आत्मा हूँ,
आपकी संतान,
गरिमा और उद्देश्य के साथ जन्मी हुई।
इस स्मृति में, बाबा,
मेरे विचार ऊँचे हो जाते हैं,
और मेरे कर्म निर्मल बन जाते हैं।
स्वमान मुझे बचाता है
व्यर्थ से
और आत्म-संशय से।
आप मुझे खुशामद नहीं करते,
आप मुझे जगाते हैं।
आप सिखाते हैं कि
मैं वही जीवन जिऊँ
जो मेरी सच्ची पहचान के अनुरूप हो।
मैं शांत आत्मविश्वास के साथ चलूँ –
अहंकार से नहीं,
बल्कि भीतरी स्थिरता से।
मेरे शब्द मेरी कीमत दर्शाएँ,
मेरा व्यवहार मेरे मूल्यों को दिखाए,
और मेरा जीवन आपकी शिक्षाओं का प्रतिबिंब बने�।
धन्यवाद, बाबा,
मुझे मेरी सच्ची पहचान
और मेरी राजयोग्य तकदीर याद दिलाने के लिए।
गरिमा और विश्वास के साथ,
आपकी योग्य संतान 
 ओम् शांति

CARD NUMBER: 10 / 5000

विषय: स्वमान (SELF-RESPECT)

भाव: मुरली प्रेरित | गरिमामय और सशक्त

आपने मुझे जो बनाया है, वह स्मृति बनी रहे, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आपके द्वारा ही
मुझे अपनी सच्ची पहचान याद आती है।
मैं यह शरीर नहीं हूँ,
न ये बदलते हुए किरदार,
न ये आती-जाती परिस्थितियाँ।
मैं एक आत्मा हूँ –
आपकी संतान।
यह स्वमान, बाबा,
मेरी सुरक्षा है।
यह मुझे भय से मुक्त रखता है,
तुलना से मुक्त,
और निर्भरता से भी मुक्त।
जब मैं इस जागरूकता में रहता/रहती हूँ,
मेरा मन स्पष्ट हो जाता है,
मेरा हृदय स्थिर हो जाता है,
और मेरे कर्म पवित्र बन जाते हैं।
आप मुझे सिखाते हैं
विनम्र रहना,
पर दृढ़ भी रहना।
सहज रहना,
पर गरिमामय भी।
मैं कभी न भूलूँ
वह सम्मान

जो आपने मुझे अपनी संतान कहकर दिया है।

मेरे विचारों में,
मेरे शब्दों में,
और मेरे व्यवहार में
मैं इस भाग्य के योग्य जीवन जी सकूँ।

अपनी सच्ची पहचान पर शांत गौरव के साथ,

आपकी स्वाभिमानी संतान

CARD NUMBER: 10 / 5000

ओम् शांति

विषय: स्वमान (SELF-RESPECT)

भाव: मुरली प्रेरित | गरिमामय और सशक्त

आपके हाथों का साधन, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,

आप मुझसे बड़े कार्य करने को नहीं कहते –

आप कहते हैं, पवित्र बनो

और मेरी विशेषताएँ अपने माध्यम से बहने दो।

जब मैं आपसे जुड़ा रहता/रहती हूँ,

तो सेवा स्वाभाविक रूप से होने लगती है –

मेरे विचारों से,

मेरे शब्दों से,

और मेरी वाइब्रेशन्स से।

आप सिखाते हैं कि सच्ची सेवा

पहचान में नहीं,

भावना में होती है।

शरू में नहीं,

बल्कि मौन और स्थिरता में।

मेरा मन शांति फैलाए,

मेरा हृदय शुभभावना बाँटे,

और मेरे कर्म आपके प्रेम का प्रतिबिंब हों।

मैं आज्ञाकारी साधन बना/बनी रहूँ –

अहंकार से मुक्त,

अपेक्षा से मुक्त,

विनम्रता से भरपूर।

मुझे उपयोग करें, बाबा,

जहाँ आपको उचित लगे,

जैसे आपको उचित लगे।

मेरी सफलता मेरी नहीं है;

यह तो आपसे जुड़े रहने की सफलता है।

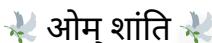
तत्परता और विश्वास के साथ,

आपकी साधन संतान 

जो मैं था/थी, उससे जो आप मुझे बना रहे हैं – शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आपके साथ
कुछ भी वैसा नहीं रहता –
न मेरे विचार,
न मेरी भावनाएँ,
न मेरा भविष्य।
आप मुझे आशा देते हैं
आसान रास्तों का वादा करके नहीं,
बल्कि ऊँचा मार्ग दिखाकर।
पुराने संस्कारों से
आप मुझे नई विशेषताओं की ओर ले जाते हैं।

संदेह से
विश्वास की ओर।
कमज़ोरी से
आंतरिक शक्ति की ओर।
आप कहते हैं, “बच्चे, पुरुषार्थ करो,”
और साथ ही कहते हैं,
“जिम्मेदारी मेरी है।”
इस संतुलन में, बाबा,
परिवर्तन संभव हो जाता है,
और भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है।
मैं पीछे मुड़कर पछतावे से न देखूँ,
बल्कि आगे साहस से बढ़ूँ।
आपके साथ उठाया हर कदम
मेरे सच्चे स्वरूप की ओर एक कदम है।

धन्यवाद, बाबा,
मुझ पर विश्वास करने के लिए,
उस समय भी
जब मुझे स्वयं पर पूरा विश्वास नहीं था।
नई आशा के साथ,
आपकी रूपांतरित होती संतान ☀️


CARD NUMBER: 12 / 5000

विषय: आशा और रूपांतरण

भाव: मुरली प्रेरित | उत्साहवर्धक और आगे बढ़ाने वाला

मैं आप पर पूर्ण विश्वास करता/करती हूँ, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आप पर श्रद्धा
मेरे मार्ग को स्पष्ट कर देती है,
भले ही आगे का दृश्य मुझे दिखाई न दे।
आप हर बात समझाते नहीं,
पर सदा आश्वस्त अवश्य करते हैं।
आप पर विश्वास करते हुए
मेरा हृदय स्थिर रहना सीखता है।
जब प्रश्न उठते हैं,
मैं एक ही सत्य को थाम लेता/लेती हूँ –
आप जानते हैं
मेरे लिए क्या श्रेष्ठ है।
आप कहते हैं, “बच्चे, आगे बढ़ो,”
और मैं कदम बढ़ा देता/देती हूँ,
यह जानते हुए
कि आप मेरे साथ चल रहे हैं।
विश्वास भय को मिटा देता है, बाबा।
यह चिंता को बदल देता है
शांत आत्मविश्वास में।
मेरी श्रद्धा गहरी हो,
परिस्थितियों से न डगमगाए,
परिणामों पर निर्भर न रहे।
मैं अपना विश्वास
आपकी बुद्धि,
आपके समय
और आपकी देखभाल में समर्पित करता/करती हूँ।
जो भी आए,
मैं आपका ही/की रहूँ।
अडिग श्रद्धा के साथ –
आपका विश्वासी बच्चा 
 ओम् शांति

मौन में, मैं आपसे मिलता/मिलती हूँ, शिवबाबा



मेरे मीठे शिवबाबा,
आप सबसे स्पष्ट तब बोलते हैं
जब मेरा मन शांत हो जाता है।

इस मौन में
विचार धीमे हो जाते हैं,
भावनाएँ कोमल हो जाती हैं,
और आत्मा

अपने सच्चे स्वरूप में विश्राम करती है।

आप शांति के सागर हैं,
और आपको याद करते ही

मैं अपनी मूल अवस्था में लौट आता/आती हूँ।

मौन खालीपन नहीं है, बाबा।

यह पूर्णता है —

जागरूकता से भरी हुई,
शक्ति से भरी हुई,
आपकी उपस्थिति से भरी हुई।

जब मैं भीतर से शांत रहता/रहती हूँ,
तो आपकी दिशा स्पष्ट हो जाती है
और मेरे कर्म सटीक बन जाते हैं।

मुझे बार-बार
मौन के क्षण रचने दें —

स्वयं को पुनः ऊर्जा देने के लिए,
सुनने के लिए,
और आपसे फिर से जुड़ने के लिए।

मेरा मौन
मुझे भी शांति दे
और इस विश्व को भी।

शांत संबंध में विश्राम करते हुए —

आपका शांत बच्चा

ओम् शांति

कार्ड नंबर: 14 / 5000

थीम: मौन (शांति)

भाव: मुरली प्रेरित | गहन और विश्रामपूर्ण

जुड़े रहकर भी मुक्त, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आप मुझे वैराग्य सिखाते हैं –
भागकर नहीं,
बल्कि स्पष्ट देखकर।
जब मैं याद करती हूँ
कि मैं कौन हूँ
और किसकी हूँ,
तो आसक्तियाँ ढीली पड़ जाती हैं,
और आत्मा हल्की हो जाती है।
मैं इस संसार में कर्म करती हूँ, बाबा,
पर साक्षी बनी रहती हूँ।
मैं प्रेम करती हूँ,
पर चिपकती नहीं।
आप कहते हैं,
“बच्चे, सबका उपयोग करो,
पर अपना समझकर केवल मुझे अपनाओ।”
इस एक दिशा में
मेरा मन मुक्त हो जाता है।
वैराग्य मुझे संतुलन देता है –
सफलता में कोई भारीपन नहीं,
हानि में कोई दुःख नहीं।
जो भी आता है,
मैं स्थिर रहती हूँ।
मुझे अपना पार्ट सच्चाई से निभाने दो,
पर मेरा हृदय आपसे जुड़ा रहे।
संबंध पवित्र रहें,
और परिस्थितियाँ छोटी।
आपकी याद में, बाबा,
मैं सच्ची स्वतंत्रता का अनुभव करती हूँ –
हल्केपन और स्पष्टता के साथ।
आपकी वैराग्यवान संतान ॐ ।

ॐ शांति ॥

कार्ड नंबर: 15 / 5000

थीम: वैराग्य (DETACHMENT)

स्वर: मुरली-प्रेरित | हल्कापन और स्वतंत्रता

विचारों में हल्कापन, हृदय में स्वतंत्रता, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आपकी याद में
मैं स्वयं को हल्का अनुभव करती हूँ –
न कोई बोझ़,
न कोई जल्दबाज़ी,
न कोई भारीपन।
आप मुझे बाँधते नहीं, बाबा,
आप तो मुझे मुक्त करते हैं –
व्यर्थ विचारों से,
पुरानी आदतों से,
अनावश्यक चिंताओं से।
जब मैं अपना भार
आपके पास छोड़ देती हूँ,
तो आत्मा विस्तृत हो जाती है,
और मन स्वच्छ हो जाता है।
यह हल्कापन ही मेरे पंख बन जाता है –
ऊँचा सोचने के लिए,
स्वाभाविक कर्म करने के लिए,
निर्भय आगे बढ़ने के लिए।
मुझे वह न उठाने दो
जो मेरा है ही नहीं।
मुझे आपके साथ
निर्बोझ और आनंदित चलने दो।
मेरा जीवन बन जाए
स्मृति से मिली स्वतंत्रता का अनुभव,
और विश्वास से मिली सहजता का प्रकाश।
हल्के हृदय और मुक्त आत्मा के साथ,
आपकी निश्चिंत संतान ॥
॥ ओम् शांति ॥

आपके साथ स्थिर, शिवबाबा MY SWEET SHIVBABA,

मेरे मीठे शिवबाबा,
आपकी याद में
मैं अपना केंद्र पा लेती हूँ।
परिस्थितियाँ बदलती हैं,
लोग बदलते हैं,
पर आप सदा एक-से रहते हैं।
आपको थामे रखने से
मेरा मन स्थिर रहता है।
संतुलन विरोध नहीं है, बाबा,
यह सज्जा स्वीकृति है।
मैं प्रतिक्रिया नहीं देती,
मैं उत्तर देती हूँ।
जब मैं स्थिर रहती हूँ,
तो स्पष्टता मेरे निर्णयों का मार्गदर्शन करती है,
और शांति मेरे हृदय की रक्षा करती है।
आप सिखाते हैं
बिना जल्दबाज़ी आगे बढ़ना,
और बिना भय ठहरना।
मेरे विचार संतुलित रहें,
मेरी भावनाएँ संयमित रहें,
और मेरे कर्म सटीक हों।
कुछ भी हो, बाबा,
मेरा भीतरी आसन दृढ़ बना रहे —
आपसे जुड़ा हुआ।
शांत शक्ति के साथ,
आपकी स्थिर संतान 
ओम् शांति

कार्ड नंबर: 17 / 5000

थीम: संतुलन और स्थिरता (स्थिरता)

स्वर: मुरली-प्रेरित | शांत और अडिंग

आपके साथ स्थिर, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आपकी याद में
मैं अपना केंद्र पा लेती हूँ।
परिस्थितियाँ बदलती हैं,
लोग बदलते हैं,
पर आप सदा एक-से रहते हैं।
आपको थामे रखने से
मेरा मन स्थिर रहता है।
संतुलन विरोध नहीं है, बाबा,
यह सजग स्वीकृति है।
मैं प्रतिक्रिया नहीं देती,
मैं उत्तर देती हूँ।
जब मैं स्थिर रहती हूँ,
तो स्पष्टता मेरे निर्णयों का मार्गदर्शन करती है,
और शांति मेरे हृदय की रक्षा करती है।

आप सिखाते हैं
बिना जल्दबाज़ी आगे बढ़ना,

और बिना भय ठहरना।

मेरे विचार संतुलित रहें,
मेरी भावनाएँ संयमित रहें,
और मेरे कर्म सटीक हों।

कुछ भी हो, बाबा,

मेरा भीतरी आसन दृढ़ बना रहे –

आपसे जुड़ा हुआ।

शांत शक्ति के साथ,

आपकी स्थिर संतान ✞

* ओम् शांति *

आपके साथ, आनंद ही मेरा स्वभाव है, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आपके साथ
आनंद कोई प्रयास नहीं —
यह तो मेरा स्वाभाविक स्वरूप है।
जब मेरी बुद्धि
आपकी याद में विश्राम करती है,
तो भीतर एक कोमल प्रसन्नता फैल जाती है —
स्थिर और गहरी।
यह आनंद परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करता।
यह स्पष्टता से जन्म लेता है,
अपनापन से,
भीतर की स्वतंत्रता से।
आप सिखाते हैं
आत्मा से मुस्कुराना,
हर दृश्य में संतुष्ट रहना,
और हल्के कदमों से आगे बढ़ना।
चाहे मौन हो,
चाहे सेवा हो,
चाहे चुनौती हो —
यह आंतरिक आनंद जीवित रहता है।
इस आनंद की रक्षा करने दो, बाबा,
शुद्ध विचारों से,
कृतज्ञ हृदय से,
और अटूट संबंध से।
मेरा आनंद
हर मिलने वाले के लिए
एक शांत उपहार बन जाए —
आपका प्रतिबिंब।
मुस्कुराती आत्मा के साथ,
आपकी आनंदित संतान 🌸
ଓ ওম্শাংতি 🙏

कार्ड नंबर: 18 / 5000
थीम: आनंद (ANAND)
स्वर: मुरली-प्रेरित | मधुर और प्रकाशित

आपके साथ निडर, शिवबाबा



मेरे मीठे शिवबाबा,
आप मेरे साथ हों,
तो भय अपनी शक्ति खो देता है।

साहस, बाबा,
ऊँची आवाज़ या कठोरता नहीं है।
यह तो वह शांत शक्ति है
जो मुझे सत्य पर स्थिर रहने देती है,
पवित्र बने रहने देती है,
और निरंतर आगे बढ़ने देती है।
जब चुनौतियाँ सामने आती हैं,
मैं आपको याद करती हूँ
और अगला कदम बढ़ाती हूँ –

शांत,
स्पष्ट,
और आत्मविश्वासी।

आप मुझे स्मरण कराते हैं
कि मैं कभी अकेली नहीं हूँ।
यही जागरूकता

मेरे भीतर सच्चा साहस भर देती है।
हर परिस्थिति का सामना कर सकूँ
आप पर विश्वास के साथ
और स्वयं के प्रति सम्मान के साथ।

मेरा साहस
आपकी शक्ति का प्रतिबिंब बने –

कोमल,
स्थिर,
और विजयी।

निडर विश्वास के साथ,
आपकी साहसी संतान 🔥

ओम् शांति



कार्ड नंबर: 19 / 5000

थीम: साहस (SAHAS)

स्वर: मुरली-प्रेरित | शांत और विजयी

मैं आपकी श्रीमत पर चलती हूँ, शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आपकी श्रीमत आदेश नहीं है,
वह तो आशीर्वाद है।

जब मैं श्रीमत पर चलती हूँ,
मेरा मार्ग स्पष्ट हो जाता है
और मेरा पुरुषार्थ सहज बन जाता है।
आप मुझे आगे धकेलते नहीं, बाबा,
आप तो प्रेम और धैर्य से
एक-एक कदम मार्गदर्शन देते हैं।

आपको सुनते-सुनते
मेरी बुद्धि स्वच्छ हो जाती है।
आपकी आज्ञा का पालन करते-करते
मेरा जीवन ऊँचा बन जाता है।

भले ही कभी पूर्ण रूप से समझ न पाऊँ,
फिर भी आपकी बुद्धि पर विश्वास रखकर
श्रद्धा से आगे बढ़ती हूँ।

मेरे विचार श्रीमत से जाँचें जाएँ,
मेरे निर्णय श्रीमत से मेल खाएँ,
और मेरे कर्म श्रीमत का प्रतिबिंब बनें।

यह आज्ञापालन ही
मेरी सुरक्षा है,
मेरी प्रगति है,
और मेरी शांति है।

प्रेमपूर्ण आज्ञाकारिता के साथ,
आपकी आज्ञाकारी संतान ❀

❀ ओम् शांति ❀

कार्ड नंबर: 21 / 5000

धीम: आज्ञापालन (श्रीमत)

स्वर: मुरली-प्रेरित | कोमल और ऊँचा

सटीक संबंध, सहज योग – शिवबाबा

मेरे मीठे शिवबाबा,
आप सिखाते हैं कि योग
कठिन प्रयास नहीं,
बल्कि सटीक संबंध है।
जब मेरी बुद्धि स्वच्छ होती है
और दिशा सही होती है,
तो याद सहज
और स्वाभाविक बन जाती है।

सहज योग, बाबा,
बार-बार यह जागरूकता है
कि मैं कौन हूँ
और किसकी हूँ।
सटीकता में
कोई भ्रम नहीं होता।
स्पष्टता में
कोई व्यर्थ नहीं रहता।

मेरी बुद्धि सत्य को तुरंत पकड़ ले,
मेरे विचार तुरंत संरेखित हो जाएँ,
और मेरी स्मृति स्थिर बनी रहे।

मैं सजग रहूँ,
पर तनावमुक्त।
एकाग्र रहूँ,
पर हल्की।

आपसे इस सटीक संबंध में
मैं सच्ची सहजता का अनुभव करती हूँ।
सजग जागरूकता के साथ,
आपकी सटीक संतान 🙏
ॐ शांति 💫

कार्ड नंबर: 22 / 5000
थीम: सटीकता (सहज योग)
स्वर: मुरली-प्रेरित | स्पष्ट और सहज

मौन में, मैं सत्य का मंथन करती हूँ

मेरे प्रिय शिवबाबा,
आप मुझे भीतर देखने का निमंत्रण देते हैं –

आलोचना करने के लिए नहीं,
बल्कि समझने के लिए।

शांत क्षणों में
मैं अपने विचारों का मंथन करती हूँ,
व्यर्थ को ज्ञान से अलग करती हूँ,
आदत को सत्य से।

मंथन, बाबा,
आपका कोमल दर्पण है –
जो दिखाता है क्या सँजोना है,
और क्या प्रेम से छोड़ देना है।

जब मैं ठहरकर चिंतन करती हूँ,
मेरी बुद्धि परिष्कृत हो जाती है,
मेरी दिशा स्पष्ट हो जाती है,
और मेरे कदम सटीक हो जाते हैं।

मुझे ईमानदारी से आत्मनिरीक्षण करने दो,
साहस से सुधार करने दो,
और हल्केपन से आगे बढ़ने दो।
इस प्रतिदिन के मंथन में
मैं सहज रूप से रूपांतरित हो जाती हूँ।

सच्चे चिंतन के साथ,
आपकी मननशील संतान ☺
 ओम् शांति ☺

मैं केवल निमित्त हूँ

मेरे मीठे शिवलाला,
जो भी मेरे माध्यम से होता है,
वह आपका कार्य है –
मैं तो केवल निमित्त हूँ।
विचार आप देते हैं,
शक्ति आप देते हैं,
सफलता भी आप ही देते हैं।
मैं तो बस उपलब्ध रहती हूँ।
जब प्रशंसा मिलती है,
उसे आपके चरणों में अर्पित कर देती हूँ।
जब चुनौतियाँ आती हैं,
तो स्मरण करती हूँ –
सब कुछ आप ही कर रहे हैं।
निमित्त भावना मुझे हल्का रखती है,
अहंकार से सुरक्षित,
और बोझ से मुक्त।
मुझे इस संसार में कोमलता से चलने दो –
झुकी हुई बुद्धि के साथ,
खुले हृदय के साथ,
और इस जागरूकता के साथ:
“बाबा ही कर्ता हैं।”
इसी नम्रता में
मैं सदा प्रसन्न,
निडर,
और सदा आपकी बनी रहती हूँ।
आपकी कृतश्च निमित्त,
आपकी संतान 
 ओम शांति 

विश्वास में अडिग, पुरुषार्थ में स्थिर

मेरे प्रिय शिवबाबा,
एक बार जब मैं आपके साथ निर्णय लेती हूँ,
तो फिर कोई डगमगाहट नहीं रहती।
मेरा निश्चय अहंकार से नहीं,
विश्वास से जन्म लेता है —
इस विश्वास से
कि आप मेरे साथ चल रहे हैं,
हर कदम को सशक्त बना रहे हैं।

बाधाएँ सामने आ सकती हैं,
पर मेरा निश्चय अटल रहता है।
परिस्थितियाँ बदल सकती हैं,
पर मेरी दिशा स्पष्ट रहती है।
आप साथी हों,
तो मेरा मन दृढ़ हो जाता है,
मेरा पुरुषार्थ निरंतर हो जाता है,
और सफलता स्वाभाविक बन जाती है।

मेरा संकल्प मौन हो,
गहरा हो,
और स्थिर हो —
जैसे हवा से सुरक्षित एक ज्योति।
आपका हाथ थामे
मैं साहस और स्पष्टता के साथ
आगे बढ़ती हूँ।
सदा दृढ़ निश्चयी,
आपकी विजयी संतान 🔥
ओम् शांति 🕊

इतनी शक्तिशाली कि प्रतीक्षा कर सकूँ

मेरे स्नेही शिवबाबा,
धैर्य कमजोरी नहीं है —
यह कोमलता से धारण की हुई शक्ति है।
जब परिस्थितियाँ मुझे परखती हैं,
मैं ठहरती हूँ,
आपको याद करती हूँ
और स्थिर बनी रहती हूँ।
सहनशक्ति मुझे सिखाती है
बिना प्रतिक्रिया के सहना,
बिना निर्णय के सपझना,
और बिना जल्दबाज़ी के आगे बढ़ना॥

प्रतीक्षा में
मेरी आंतरिक शक्ति गहरी हो जाती है॥

सहनशीलता में
मेरी आत्मा विस्तृत हो जाती है॥

आप याद दिलाते हैं, बाबा,
कि हर दृश्य बीत जाता है,
पर गुण सदा साथ रहते हैं।
मुझे धैर्य को ऐसे धारण करने दो
जैसे एक मुकुट —
मौन,
गरिमामय,
और अडिगा।

शांत सहनशक्ति के साथ,
आपकी शांत संतान 
 ओम् शांति 

कार्ड नंबर: 26 / 5000

थीम: सहनशक्ति (PATIENCE)

स्वर: मुरली-प्रेरित | शांत और शक्तिशाली

मैं छोड़ती हूँ, मैं ऊँची उठती हूँ

मेरे दयालु शिवबाबा,
क्षमा स्वयं को दिया हुआ मेरा उपहार है।
मैं बीते कल का भार छोड़ देती हूँ
और आज स्वतंत्र श्वास लेती हूँ।
आपकी याद में
मेरा हृदय कोमल हो जाता है,
मेरा मन हल्का हो जाता है,
और मेरी आत्मा स्वस्थ होने लगती है।
मैं क्षमा इसलिए नहीं करती
कि कोई मुझसे माँगे,
बल्कि इसलिए
कि आप मुझे सिखाते हैं
दुःख से मुक्त रहकर जीना।
क्षमा मेरे भीतर की जगह को स्वच्छ कर देती है,
जिससे शांति फिर से प्रवाहित होती है।
जो क्षमा कर दिया, वह अपनी शक्ति खो देता है;
जो छोड़ दिया, वह बाँध नहीं सकता।
आपके साथ, बाबा,
मैं शिकायत पर करुणा चुनती हूँ,
चोट पर समझ,
और सीमा पर प्रेम।
क्षमा करते-करते
मैं आपके और निकट उठती जाती हूँ।
आपकी कोमल, उपचारमयी संतान,
आपकी शांति-स्वरूप आत्मा ❤️

ओम् शांति

कार्ड नंबर: 27 / 5000

थीम: क्षमा (KSHAMA)

स्वर: मुरली-प्रेरित | उपचारात्मक और मुक्तिदायक

संगमयुग का एक प्रेम-पत्र – शिवबाबा के नाम

प्रियतम शिवबाबा,
कालचक्र के पार –
सत्युग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग...
पर केवल संगमयुग ही यह चमत्कार धीरे से कहता है –
आत्मा का परमात्मा से मिलन।

न कोई मंदिर,
न कोई विधि-विधान,
न कोई ध्वनि –
बस मौन...
जो आपसे भरा है।

बस स्मृति...
जो प्रेम में साँस लेती है।
मेरे साथ रहिए, शिवबाबा,
सिर्फ अभी नहीं,
पर चक्र के हर मोड़ पर –
मेरे अदृश्य साथी बनकर,
मेरे शाश्वत अपनापन बनकर।

मेरे हृदय को आशीर्वाद दें
कि वह पवित्र और दयालु बना रहे।
मेरी बुद्धि को तीक्ष्ण और दिव्य बनाएँ।
मेरे व्यक्तित्व में आपकी रॉयल्टी झलके –
आँधियों में शांत,
वाणी में मधुर,
और सत्य में शक्तिशाली।

मेरे विचार परिस्थितियों से ऊँचे उठें,
मेरे कर्म आत्म-अभिमान की भाषा बोलें,
मेरा जीवन एक कोमल प्रमाण बन जाए
कि संगमयुग में
ईश्वर मेरे साथ चले थे।

मैं आपको कुछ नहीं दे सकती
सिवाय स्वयं के –
अपना विश्वास,
अपनी स्मृति,
अपना प्रेम।

मुझे स्वीकार करें, शिवबाबा,
अपनी संतान के रूप में –
आज... और अनंतकाल तक।

सदैव आपकी,
संगमयुग में जागी हुई
एक आत्मा 
 ओम् शांति 

कार्ड नंबर: * / 5000

थीम: प्रेम (LOVE)

स्वर: मुरली-प्रेरित | दिव्य और कालातीत



विचारों में स्पष्ट, दिशा में दृढ़

मेरे मार्गदर्शक शिवबाबा,
जब मैं आपको याद करती हूँ,
तो भीतर का भ्रम मिट जाता है।

मेरे विचार एक हो जाते हैं,
मेरी बुद्धि तीक्ष्ण बन जाती है,
और मेरे निर्णय सटीक हो जाते हैं।

स्पष्टता मुझे यह देखने देती है –
क्या आवश्यक है,
क्या व्यर्थ है,
और क्या सत्य है।

जहाँ स्पष्टता है,
वहाँ कोई भ्रम नहीं,
कोई आंतरिक संघर्ष नहीं,
सिर्फ शांत आत्मविश्वास।

आप सिखाते हैं
ठहरकर दिशा जाँचना,
और फिर निश्चितता के साथ आगे बढ़ना।

मेरा मन स्वच्छ रहे,
मेरी दृष्टि पवित्र रहे,
और मेरा मार्ग सीधा रहे।

स्पष्ट जागरूकता के साथ,
आपकी एकाग्र संतान ☺

ओम् शांति

कार्ड नंबर: 28 / 5000

थीम: स्पष्टता (SPASHTATA)

स्वर: मुरली-प्रेरित | पवित्र और सटीक

भीतर से पूर्ण, बाहर से मुक्त

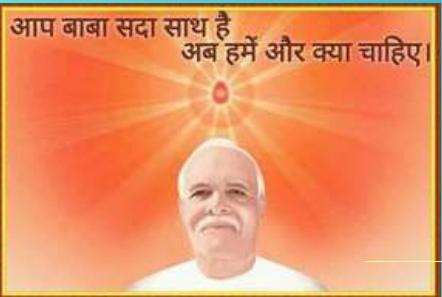
मेरे सदा देने वाले शिवबाबा,
आपके साथ
कुछ भी अधूरा नहीं लगता।
संतोष अधिक पाने में नहीं,
पूर्ण अनुभव करने में है।
जब मैं आपको याद करती हूँ,
मेरी इच्छाएँ शांत हो जाती हैं,
तुलनाएँ मिट जाती हैं,
और भीतर शांति बस जाती है।
संतुष्टता मेरी आत्मा को भर देती है —
कोमल प्रसन्नता से,
स्थिर कृतज्ञता से,
और गहरे विश्वास से।

मैं हर दृश्य को स्वीकार करना सीखती हूँ,
जो मिला है उसका सही उपयोग करना,
और हर परिस्थिति में प्रसन्न रहना।
आप याद दिलाते हैं, बाबा,
कि संतुष्ट आत्मा
सदैव समृद्ध होती है।

इस पूर्णता में विश्राम करती हुई,
आपकी संतुष्ट संतान 
 ओम् शांति 

एक हृदय जो समझता है

मेरे दयालु शिवबाबा,
आप मुझे कर्मों से परे देखने की शिक्षा देते हैं,
और उस पीड़ा को महसूस करना सिखाते हैं
जो भीतर छिपी होती है।
करुणा आपकी भाषा है –
मृदु, समझ से भरी,
और गहराई से उपचार करने वाली।
जब मैं आपको याद करती हूँ,
मेरा हृदय खुल जाता है,
मेरे निर्णय मिट जाते हैं,
और प्रेम बहने लगता है।
करुणा मुझे सक्षम बनाती है
बिना प्रतिक्रिया के सुनने में,
बिना शर्त क्षमा करने में,
और बिना अपेक्षा सहायता करने में।
मैं समझती हूँ
कि हर आत्मा
किसी अनदेखे संघर्ष से गुजर रही है –
शांति की खोज में,
प्रेम की तलाश में।
मेरी आँखों में आपकी दया झलके,
मेरे शब्दों में लात्यना हो,
और मेरा मौन भी शक्ति प्रदान करे।
करुणामय हृदय के साथ,
आपकी प्रेममयी संतान। 
 ओम् शांति 



कृतज्ञ हूँ, इसलिए उपयोगी हूँ

मेरे देने वाले शिवबाबा,
कृतज्ञता केवल एक भावना नहीं —
यह मेरा जीवन जीने का तरीका है।
हर श्वास जो मैं लेती हूँ,
हर गुण जिसका मैं उपयोग करती हूँ,
हर सेवा का अवसर —
सब आपका उपहार है।

सच्ची कृतज्ञता

मेरे हाथों को कर्म में लगाती है,
मेरे शब्दों को कोमल बनाती है,
और मेरे कार्यों को संवेदनशीलता से भर देती है।

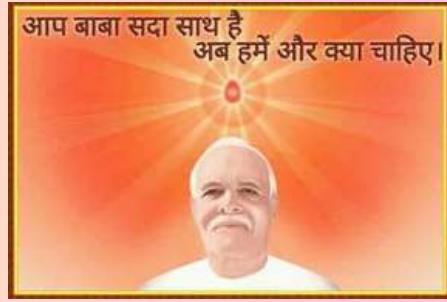
जब मैं स्मृति में रहकर कार्य करती हूँ,
प्रेम से सेवा करती हूँ,
और धैर्य से उत्तर देती हूँ —
तब मेरी कृतज्ञता दिखाई देती है।

मेरी सटीकता में,
मेरी नम्रता में,
और दूसरों को ऊँचा उठाने के
निरंतर पुरुषार्थ में

मेरी धन्यवाद भावना झलके।
कर्मों के माध्यम से
मैं बार-बार कहती हूँ —
धन्यवाद, बाबा।

अपनी कृतज्ञता को जीती हुई,
आपकी आभारी संतान

ओम् शांति



वह प्रेम जो कभी नहीं बदलता

मेरे मीठे शिवबाबा,
आप कोई ऐसे नहीं
जिन्हें मैं केवल याद करती हूँ –

आप तो वे हैं
जिनसे मैं जुड़ी हूँ,
जिनकी मैं हूँ।
हर श्वास में,
हर मौन में,

मैं आपके सान्निध्य को महसूस करती हूँ
जो मुझे थामे हुए है।

आपका प्रेम कुछ माँगता नहीं,
फिर भी मुझे सब कुछ दे देता है।
मैं आपकी हूँ –

आज भी,
और सदा के लिए।

अनंत प्रेम के साथ,
आपकी संतान

ओम् शांति

कार्ड नंबर: * / 5000

थीम: अटल प्रेम

स्वर: मुरली-प्रेरित | शाश्वत और मधुर

अंतर में स्वराज्य

मेरे राजाधिराज शिवबाबा,
राजयोग के माध्यम से
आप मेरी आत्मा पर
आत्म-सम्मान का मुकुट धारण कराते हैं।
मैं अपने विचारों पर राज्य करती हूँ,
अपनी भावनाओं का संचालन करती हूँ,
और शांत अधिकार से
अपनी प्रतिक्रियाएँ चुनती हूँ।
आपकी याद मुझे

मेरे आंतरिक राज्य की स्वामिनी बना देती है —

आँधियों में स्थिर,
शक्ति में कोमल,
दिशा में स्पष्ट।

मैं बाहर नियंत्रण नहीं खोजती;
मैं भीतर स्वयं पर शासन करती हूँ।
मेरा मन सत्य का आज्ञाकारी रहे,
मेरी बुद्धि श्रीमत की निष्ठावान रहे,
और मेरे कर्म गरिमामय और न्यायपूर्ण हों।

आपके द्वारा मुकुटधारी,
आपकी राजसी संतान
 ओम् शांति 

राजयोगः स्मृति द्वारा आत्म-स्वराज्य

शांत · स्पष्ट · संयमित

कार्ड नंबरः 32 / 5000

थीमः आंतरिक स्वराज्य (INNER AUTHORITY)

त्वर. मुरली-प्रेरित | राजसी और संतुलित



सही पुरुषार्थ · सही परिणाम

मेरे मार्गदर्शक शिवबाबा,
पुरुषार्थ ऊँचा बन जाता है
जब वह सटीक होता है।
आप सिखाते हैं जाँचना —

मेरे विचार,
मेरे इरादे,
मेरी दिशा।

पुरुषार्थ बलपूर्वक प्रयास नहीं है;
वह जागरूकता के साथ किया गया कर्म है।

आपके साथ
मैं सही समय पर,
सही विधि से,
और सही भावना से कार्य करना सीखती हूँ।

सटीकता ऊर्जा बचाती है,
पछतावे से बचाती है,
और सफलता को स्वाभाविक बना देती है।

मेरा पुरुषार्थ निरंतर रहे,
मेरा जाँच-पड़ताल ईमानदार हो,
और मेरी प्रगति स्थिर हो।

सटीकता के साथ आगे बढ़ती हुई,
आपकी सच्ची संतान

ओम् शांति

पुरुषार्थ: श्रीमत द्वारा मार्गदर्शित प्रयास

★ जागरूकता · अनुशासन · प्रगति ★

कार्ड नंबर: 34 / 5000

थीम: पुरुषार्थ में सटीकता

स्वर: मुरली-प्रेरित | जागरूक और अनुशासित

रुकें • जाँचें • आगे बढ़ें

मेरे स्नेही शिवबाबा,
आप सिखाते हैं
आगे बढ़ने से पहले
एक क्षण ठहरना।
चिंतन के द्वारा
मैं अपने विचारों को जाँचती हूँ –
क्या वे पवित्र हैं?
क्या वे उपयोगी हैं?
मैं अपनी भावनाओं को भी देखती हूँ –
क्या वे ऊँची हैं
या किसी प्रभाव में हैं?
आत्म-जाँच मुझे ईमानदार रखती है,
सजग रखती है,
और श्रीमत के अनुरूप बनाए रखती है।
स्वयं की आलोचना के लिए नहीं,
बल्कि स्वयं को परिष्कृत करने के लिए।
हर जाँच स्पष्टता लाती है,
हर सुधार विकास लाता है।
यह कोमल आदत
मेरी स्थिति की रक्षा करे
और मेरी प्रगति को तीव्र बनाए।
सजगता से आगे बढ़ती हुई,
आपकी जिम्मेदार संतान
 ओम् शांति 

चिंतन: वह जागरूकता जो आत्मा को निखारती है
ईमानदारी • स्पष्टता • विकास

प्रेममय, फिर भी मुक्त

मेरे न्यारे-प्यारे शिवबाबा,
आप मुझे यह कला सिखाते हैं
जुड़े रहना,
पर बँधना नहीं।
न्यारापन मुझे सक्षम बनाता है
गहराई से प्रेम करने में,
और फिर भी हल्का बने रहने में।
मैं अपने सभी पार्ट
सावधानी और स्नेह से निभाती हूँ,
पर मेरा भीतरी लंगर
आपमें स्थिर रहता है।
अपेक्षाओं से मुक्त,
भावनात्मक खचाव से स्वतंत्र,
मैं हर दृश्य में स्थिर रहती हूँ।

यह संतुलन
मेरी शांति की रक्षा करता है
और मेरे आनंद को सुरक्षित रखता है।
मुझे कमल-आत्मा बनने दें —

संसार में जड़े हों,
पर उससे ऊपर उठ हुई।
प्रेममय, फिर भी मुक्त,
आपकी संतुलित संतान

ओम् शांति

न्यारापनः बंधन रहित प्रेम
संतुलन · हल्कापन · स्थिरता

कार्ड नंबर: 36 / 5000

थीम: प्रेम में वैराग्य (Detachment with Love)

स्वर: मुरली-प्रेरित | संतुलित और हल्का

हर दृश्य में स्थिर

मेरे अडिग शिवबाबा,
परीक्षाएँ मेरी स्थिति को जाँचने आती हैं,
उसे डगमगाने नहीं।
आपका हाथ थामे
मैं परिवर्तन में भी शांत रहती हूँ,
विश्वास में दृढ़,
और पुरुषार्थ में स्थिर।
जब परिस्थितियाँ हिलती हैं,
मैं प्रतिक्रिया नहीं देती —
मैं सजगता से उत्तर देती हूँ।
पेपर-प्रूफ अवस्था का अर्थ है —
न कोई शिकायत,
न कोई भ्रम,
सिर्फ शांत आत्मविश्वास।
आपकी स्मृति मुझे
पर्वत के समान स्थिर कर देती है —
मौन,
अडिग,
अचल।

मेरे विचार पवित्र बने रहें,
मेरी भावनाएँ संतुलित रहें,
और मेरे कर्म गरिमा से भरे हों।
हर परीक्षा में सिद्ध होती हुई,
आपकी स्थिर संतान

पेपर-प्रूफ: वह स्थिरता जो स्वयं बोलती है

★ शांति · विश्वास · अधिकार ★

आपकी संगति में सुरक्षित

मेरे रक्षक शिवबाबा,
आप साथ हैं तो
भय अपनी आवाज़ खो देता है।
मैं अकेली नहीं,
मैं निर्बल नहीं,
मैं असमंजस में नहीं।
आपकी उपस्थिति
मुझे साहस और आत्मविश्वास से भर देती है।
निर्भयता का अर्थ है —
यह जानना कि
सत्य की छत्रछाया में
आत्मा को कोई स्पर्श नहीं कर सकता।
मैं आगे बढ़ती हूँ
स्थिर हृदय के साथ,
स्वच्छ और स्पष्ट बुद्धि के साथ।
न भविष्य का भय,
न अतीत की चिंता —
सिर्फ आप पर अटूट विश्वास।
निर्भय और मुक्त,
आपकी साहसी संतान
ओम् शांति

निर्भयता: विश्वास से जन्मा साहस
विश्वास · शक्ति · सुरक्षा

कार्ड नंबर: 38 / 5000

थीम: निर्भयता

स्वर: मुरली-प्रेरित | सुरक्षा और विश्वास

झलकता हुआ आनंद

मेरे आनंददाता शिवबाबा,
आपकी स्मृति आते ही
मेरा हृदय सहज मुस्कुरा उठता है।
उल्लास कोई बाहरी उत्साह नहीं—
यह शांत खुशी है,
जो आप पर विश्वास से जन्म लेती है।
साधारण क्षणों में भी
आपकी उपस्थिति मुझे हल्का बना देती है।
चुनौतियों के बीच भी
मेरी आत्मा ऊँची बनी रहती है।
प्रसन्नता मुझे आशावान रखती है,
सेवा को मधुर बनाती है,
और पुरुषार्थ को आनंद में बदल देती है।
मेरी मुस्कान आत्मा से निकले,
मेरे शब्दों में ऊष्मा हो,
और मेरे कर्म सकारात्मकता दर्शाएँ।
आनंद में लीन,
आपकी हँसमुख संतान
ओम् शांति

उल्लासः स्मृति से उपजा आत्मिक आनंद
★ हल्कापन · सकारात्मकता · आशा ★

भीतर से मुक्त

मेरे मुक्तिदाता शिवबाबा,
सच्ची स्वतंत्रता भागना नहीं—

छोड़ देना है।

आपकी स्मृति में

मैं बोझ छोड़ देती हूँ,

अपेक्षाएँ छोड़ देती हूँ,

और पुराने विचारों की जंजीरें तोड़ देती हूँ।

मुक्ति भावना

मेरे मन को भय से मुक्त करती है,

मेरे हृदय को भारीपन से,

और मेरी आत्मा को सीमाओं से।

मैं हर भूमिका निभाती हूँ

बिना बंधन के,

प्रेम करती हूँ बिना आसक्ति के,

कर्म करती हूँ बिना दबाव के।

आप स्मरण कराते हैं, बाबा,

कि मैं आत्मा हूँ—

सदैव स्वतंत्र,

सदा हल्की।

इसी जागरूकता में विश्राम करती हुई,

आपकी मुक्ति संतान

ओम् शांति

मुक्ति भावना: जागरूकता से प्राप्त स्वतंत्रता

★ हल्कापन · त्याग · शांति ★

विश्वास के साथ आने वाले कल को देखना

मेरे आशा-दाता शिवबाबा,
आपके साथ
मेरी दृष्टि सदा उज्ज्वल रहती है।
दृश्य बदलते रहें,
फिर भी मैं आत्मविश्वास से आगे देखती हूँ,
क्योंकि जानती हूँ—
हर कदम पर आपकी ही दिशा है।
आशा कोई कल्पना नहीं—
यह कर्म में प्रकट होता विश्वास है,
स्मृति में जड़ा हुआ भरोसा है।
आप मुझे संभावनाएँ दिखाते हैं
जहाँ अन्य सीमाएँ देखते हैं,
प्रकाश दिखाते हैं
जहाँ अनिश्चितता होती है।
मेरे विचार सकारात्मक बने रहें,
मेरा दृष्टिकोण ऊँचा रहे,
और मेरा हृदय विश्वास में अडिग रहे।
आपकी दृष्टि से भविष्य को निहारती हुई,
आपकी आशावान संतान

ओम् शांति

आशा: विश्वास में जड़ी हुई दृष्टि
सकारात्मकता · भरोसा · दिशा

भीतर स्वच्छ • आगे स्पष्ट

मेरे पावन बनाने वाले शिवबाबा,
सच्ची स्वच्छता भीतर से प्रारंभ होती है—
मेरे विचारों में,
मेरी नीयत में,
मेरी भावनाओं में।
आपकी स्मृति में
पुराने संस्कार घुलने लगते हैं,
व्यर्थ विचार मिटने लगते हैं,
और मन फिर से ताज़गी अनुभव करता है।
शुद्धता लाती है स्पष्टता,
हल्कापन,
और शांत आनंद।
मैं अपने अंतरिक्ष को
नकारात्मकता से मुक्त रखती हूँ,
भारीपन से मुक्त,
ध्रम से मुक्त।
मेरे विचार पवित्र बने रहें,
मेरी दृष्टि निर्मल रहे,
और मेरे कर्म ऊँचे रहें।

आंतरिक स्वच्छता के साथ जीवन जीती हुई,
आपकी निर्मल-हृदय संतान

ओम् शांति

शुद्धता: आत्मा की रक्षा करने वाली निर्मलता

पवित्र विचार • स्पष्ट बुद्धि • शांत हृदय

कार्ड नंबर: 42 / 5000

थीम: शुद्धता (आंतरिक स्वच्छता)

स्वर: मुरली-प्रेरित | निर्मलता और स्पष्टता

आत्म-जागरूकता में शक्तिशाली

मेरे शक्तिदाता शिवबाबा,
जब मैं स्मरण करती हूँ कि मैं कौन हूँ—
एक शांत, शक्तिशाली आत्मा,
आपकी मार्गदर्शित संतान—
तो आत्मविश्वास सहज बहने लगता है।

आत्म-विश्वास मुझे मुक्त करता है
तुलना से,
हिचकिचाहट से,
असफलता के भय से।

मैं अपनी आंतरिक शक्ति पर भरोसा रखती हूँ,
अपनी स्पष्ट बुद्धि पर,
और अपनी ऊँची दिशा पर।

आपके सहारे से
मैं शांति से आगे बढ़ती हूँ,
गरिमा से बोलती हूँ,
और निश्चितता से कर्म करती हूँ।

मेरा आत्मविश्वास नम्र रहे,
स्थिर रहे,
और सत्य से जुड़ा रहे।

स्वमान में अडिग खड़ी हुई,
आपकी आत्मविश्वासी संतान

ओम् शांति

आत्म-विश्वासः स्वमान में जड़ी हुई दृढ़ता

★ स्थिरता · साहस · स्पष्टता ★

कार्ड नंबर: 43 / 5000

थीम: आत्म-विश्वास (स्वमान में दृढ़ता)

स्वर: मुरली-प्रेरित | गरिमा और आंतरिक शक्ति

सत्य के साथ चलते हुए

मेरे सत्यस्वरूप शिवबाबा,

आप स्वयं सत्य हैं—

अटल, स्पष्ट, अपरिवर्तनशील।

जब मैं सत्य के साथ स्वयं को संरेखित करती हूँ,

मेरा मन हल्का हो जाता है,

मेरा हृदय मुक्त अनुभव करता है,

और मेरा मार्ग सीधा हो जाता है।

सत्य मुझे साहस देता है—

विचारों में ईमानदार रहने का,

नीयत में पवित्र रहने का,

और कर्मों में स्वच्छ रहने का।

जहाँ सत्य है

वहाँ भय नहीं,

जहाँ स्पष्टता है

वहाँ बोझ नहीं।

मेरे शब्द सच्चे रहें,

मेरे कर्म पारदर्शी रहें,

और मेरा अंतःकरण शांत रहे।

सत्य का हाथ थामे हुए,

आपकी सच्ची संतान

ओम् शांति

सत्यः वह शक्ति जो मुक्त करती है

★ ईमानदारी · साहस · पवित्रता ★

अच्छा देखना · अच्छा महसूस करना

मेरे सदा सकारात्मक शिवबाबा,
आप सिखाते हैं कि
दृश्य चाहे चुनौतीपूर्ण हों,
फिर भी अच्छाई को देखना संभव है।
सकारात्मकता वास्तविकता से आँख मूँदना नहीं—
यह आशा चुनना है,
अर्थ चुनना है,
विकास चुनना है।
आपके साथ
मेरे विचार शिकायतों से ऊपर उठते हैं,
मेरी दृष्टि समस्याओं से ऊँची हो जाती है,
और मेरा हृदय हल्का बना रहता है।
सकारात्मकता मेरी आत्मा को प्रसन्न रखती है,
मेरी सेवा को प्रभावी बनाती है,
और मेरी यात्रा को आनंदमय करती है।
मेरे विचार उन्नत रहें,
मेरा दृष्टिकोण रचनात्मक रहे,
और मेरे शब्द उत्साहवर्धक हों।
सकारात्मकता की किरणें फैलाती हुई,
आपकी आशावादी संतान
 ओम् शांति 

सकारात्मकता: वह शक्ति जो ऊपर उठाती है
✨ आशा · हल्कापन · सामर्थ्य ✨

विश्वास में अडिग

मेरे विश्वसनीय शिवबाबा,
निष्ठा का अर्थ है सच्चा बने रहना—
सिर्फ सहज समय में नहीं,
हर परिस्थिति में।

आप पर मेरा विश्वास
परिस्थितियों पर आधारित नहीं;
वह अनुभव पर टिका है।

जब प्रश्न उठते हैं,
मैं स्मृति में लौट आती हूँ।
जब परीक्षाएँ सामने आती हैं,
मैं आपका हाथ और दृढ़ता से थाम लेती हूँ।

निष्ठा मेरी बुद्धि को स्थिर रखती है,
मेरे पुरुषार्थ को निरंतर,
और मेरे प्रेम को अटल।

मेरी वफादारी दृढ़ बनी रहे,
मेरा संबंध गहरा रहे,
और मेरा भरोसा अडिग रहे।

सदैव निष्ठावान्,
आपकी समर्पित संतान

ओम् शांति

निष्ठा: वह विश्वास जो कभी डगमगाता नहीं
वफादारी . स्थिरता . भरोसा

अटल विश्वास

मेरे विश्वसनीय शिवबाबा,
अटल विश्वास का अर्थ है—

पीछे मुड़कर न देखना।

आप पर मेरा भरोसा
उधार लिया हुआ नहीं,
अनुभव से निर्मित है।

मार्ग कभी अस्पष्ट लगे,

फिर भी मुझे मंज़िल पर पूरा विश्वास है।

आपकी उपस्थिति

मेरे मन को स्थिर करती है,

मेरे पुरुषार्थ को शक्ति देती है,

और मेरी विजय को सुनिश्चित करती है।

कोई संदेह मुझे डिगा नहीं सकता,

कोई परीक्षा मुझे मोड़ नहीं सकती,

क्योंकि आप मेरे साथ चलते हैं।

अविचल आस्था के साथ,

आपकी दृढ़-संकल्प संतान

ओम् शांति

अटल विश्वास: वह आस्था जो पार ले जाती है

★ निश्चय · साहस · विजय ★

कार्ड नंबर: 47 / 5000

थीम: अटल विश्वास (दृढ़ आस्था)

स्वर: मुरली-प्रेरित | निश्चय और विजय

मैं आत्मा हूँ

मेरे प्रिय शिवबाबा,
आज मैं अपनी सच्ची पहचान में लौटती हूँ।
मैं यह शरीर नहीं,
न वे भूमिकाएँ जो मैं निभाती हूँ,
न वे परिस्थितियाँ जिनका मैं सामना करती हूँ।
मैं एक शांत आत्मा हूँ—
शुद्ध प्रकाश का बिंदु,
अनादि, सजग और शक्तिशाली।
आत्म-चेतना में स्थित होकर
मेरे विचार स्वच्छ हो जाते हैं,
मेरे शब्द मधुर बन जाते हैं,
और मेरे कर्म ऊँचे हो जाते हैं।
आप, परमात्मा से जुड़कर
मैं अहंकार से मुक्त होती हूँ,
भय से मुक्त होती हूँ।
देही-अभिमान में स्थापित होकर
मैं जीवन को हल्केपन से जीती हूँ,
स्वाभाविक सेवा करती हूँ,
और निस्वार्थ प्रेम करती हूँ।
आपकी आत्म-चेतन संतान

ओम् शांति

देही-अभिमान: आंतरिक स्वतंत्रता की कुंजी

✨ जागरूकता · पवित्रता · शांति ✨

कार्ड नंबर: 48 / 5000

थीम: देही-अभिमान (आत्म-स्मृति)

स्वर: मुरली-प्रेरित | स्व-चेतना और आंतरिक स्वतंत्रता

धन्यवाद, मेरे प्यारे बाबा

मेरे अति प्रिय शिवबाबा,
जीवन के हर दृश्य में
—देखे और अनदेखे,
कहे और मौन—
मेरे साथ चलने के लिए धन्यवाद।
जब मैं मजबूत थी,
आपने मुझे कोमलता से दिशा दी।
जब मैं कमजोर थी,
आपने मुझे निःशब्द संभाल लिया।
भीड़ में आप मेरा आधार बने,
एकांत में मेरे सच्चे मित्र।
उलझन में मेरी स्पष्टता,
दर्द में मेरा सुकून।
आपकी संगति
मेरी जागरूकता पर निर्भर नहीं थी,
पर जैसे ही मैं जागरूक हुई,
जीवन हल्का, सुरक्षित और मधुर हो गया।
हर श्वास में,
हर कदम में,
हर परिवर्तन में
आपकी उपस्थिति के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।
आपकी संगति पाना
मेरी आत्मा का सबसे बड़ा सौभाग्य है।
सदैव आभारी,
आपकी संतान
ओम् शांति

वह मौन सहारा जो कभी साथ नहीं छोड़ता
★ कृतज्ञता · विश्वास · अपनापन ★

कार्ड नंबर: 49 / 5000
थीम: कृतज्ञता (बाबा की संगति के लिए आभार)
स्वर: मुरली-प्रेरित | मधुरता और अपनापन

हठ श्वास में आपकी स्मृति

मेरे मधुर शिवबाबा,
अब मैं आपको याद करने का प्रयास नहीं करती—
मैं बस आपके साथ रहती हूँ।
जैसे श्वास बिना प्रयास के चलती है,
वैसे ही आपकी स्मृति
मेरी चेतना में बहती रहती है—
मृदु, स्थिर और मौन।
कर्म में आप मेरी पृष्ठभूमि का संगीत हैं।
स्थिरता में आप मेरी सबसे निकट उपस्थिति।
गतिशीलता में आप मेरी दिशा।
विश्राम में आप मेरी शांति।
यह कोई बाध्य योग नहीं,
न अभ्यास से किया गया स्मरण—
यह स्वाभाविक संबंध है,
जो प्रेम, विश्वास और अपनत्व से जन्मा है।
हाथ व्यस्त हों तो भी
मेरा हृदय जुड़ा रहता है।
शब्द थम जाएँ तो भी
आत्मा का संवाद चलता रहता है।
धन्यवाद, बाबा,
यह सिखाने के लिए कि
सच्ची स्मृति सहज हो जाती है
जब संबंध सच्चा हो।
सदैव जुड़े हुए,
आपकी प्रेममयी संतान
ओम् शांति

सहज स्मृतिः जब प्रेम ही योग बन जाए
★ प्रेम · सहजता · निरंतरता ★

कार्ड नंबर: 50 / 5000
थीम: सहज स्मृति (स्वाभाविक योग)
स्वर: मुरली-प्रेरित | प्रेममय और गहरा संबंध

मैं आत्म-स्वराज्य का मुकुट धारण करती हूँ

मेरे प्रिय शिवबाबा,
आपने मुझे सोने का सिंहासन नहीं दिया—

आपने मुझे स्वमान दिया।

आपने मेरे सिर पर मुकुट नहीं रखा—

आपने मेरी आत्मा के भीतर के राजा को जगा दिया।

आपकी स्मृति में

मेरे विचार गरिमा के आसन पर विराजते हैं।

मेरे शब्द मधुरता के रत्न पहनते हैं।

मेरे कर्म शांत अधिकार के साथ चलते हैं।

यह मेरा आंतरिक राज्य है—

जहाँ शांति शासन करती है,

पवित्रता रक्षा करती है,

और ज्ञान मार्गदर्शन करता है।

निर्भरता से मुक्त,

भय से मुक्त,

मैं आत्म-सम्मान बनकर चलती हूँ—

नम्र, स्थिर और कल्याणकारी।

धन्यवाद, बाबा,

रोज यह स्मरण कराने के लिए

कि मैं परिस्थितियों की भिखारी नहीं,

बल्कि आपकी राजाई में स्थापित

एक स्वराज्य आत्मा हूँ।

आपकी राजसी संतान,

स्व-नियंत्रण में स्थित

ओम् शांति

आंतरिक राजमुकुटः स्वमान से जन्मी महारत

★ गरिमा · आत्म-सम्मान · अधिकार ★

कार्ड नंबर: 51 / 5000

थीम: स्वराज्य (आत्मिक राजाई)

स्वर: मुरली-प्रेरित | गरिमा और आत्म-स्वामित्व

मैं स्वयं पर राज्य करती हूँ – मैं स्वतंत्र होकर कर्म करती हूँ

मेरे प्रिय शिवबाबा,
आपने सिखाया है कि
सच्ची स्वतंत्रता भागना नहीं,
हर क्षण स्वयं पर शासन करना है।

स्वराज्य में

मेरा मन थांति चुनता है,
मेरी बुद्धि सत्य चुनती है,
मेरे संस्कार पवित्रता चुनते हैं।
मैं कर्म करती हूँ, पर धकेली नहीं जाती।
मैं निर्णय लेती हूँ, पर दबाव में नहीं आती।
मैं सेवा करती हूँ, पर भीतर से स्वतंत्र रहती हूँ।

हर कर्म

आपकी शिक्षाओं का हस्ताक्षर बन जाता है—
सिर्फ स्मरण नहीं,
जीवन में उतार हुआ अनुभव।
कोई परिस्थिति मुझे नियंत्रित नहीं करती—
मैं अपनी प्रतिक्रियाओं की स्वामी हूँ।
कोई भावना मुझे खींच नहीं सकती—
मैं सजगता के सिंहासन पर विराजमान रहती हूँ।
धन्यवाद, बाबा,
मुझे यह शक्ति देने के लिए
कि मैं कर्म में राजयोग जी सकूँ,
अपने आचरण से आंतरिक राजाई प्रकट कर सकूँ,
और इस संसार में
स्व-स्वाधीन आत्मा बनकर चल सकूँ।

आपकी संतान,
स्वराज्य में स्थापित
ओम् थांति

स्व-नियंत्रण से स्वतंत्रता: जागठकता में स्थित अधिकार
★ जागठकता · चयन · अधिकार ★

कार्ड नंबर: 52 / 5000

थीम: स्वराज्य कर्म में (स्व-शासन की अवस्था)

स्वर: मुरली-प्रेरित | जागठकता और अधिकार

शक्ति भीतर से उठती है

मेरे शक्तिशाली शिवबाबा,
आपने सिखाया है कि
सच्ची शक्ति शोर नहीं करती—
वह अडिंग खड़ी रहती है।
जब चुनौतियाँ आती हैं,
मैं बाहर नहीं देखती,
मैं भीतर लौटती हूँ।
मैं आत्मा से शक्ति लेती हूँ,
आपकी स्मृति से चार्ज होकर।
यह आंतरिक शक्ति
मुझे तूफ़ानों में शांत रखती है,
अनिश्चितता में स्थिर रखती है,
और सामर्थ्य के साथ भी कोमल बनाए रखती है।
मैं परिस्थितियों से लड़ती नहीं—
मैं उनसे ऊपर उठती हूँ।
मैं दूसरों को जीतने का प्रयास नहीं करती—
मैं अपनी कमजोरियों पर विजय पाती हूँ।
अंतर शक्ति से
मेरे विचार ऊँचे रहते हैं,
मेरा साहस निरंतर रहता है,
मेरा विश्वास अटल रहता है।
धन्यवाद, बाबा,
मुझे भीतर से मजबूत बनाने के लिए—
ऐसी आत्मा जो
जान से झुकती है,
पर कभी टूटती नहीं।
आपकी संतान,
आंतरिक सामर्थ्य में स्थित
ओम् शांति

आत्मिक शक्ति: वह बल जो भीतर से समर्थ बनाता है
★ स्थिरता · साहस · अंतरबल ★

कार्ड नंबर: 53 / 5000

थीम: आंतरिक शक्ति (अंतर शक्ति)

स्वर: मुरली-प्रेरित | शांत सामर्थ्य और स्थिरता

मैं प्रतिदिन अभ्यास करती हूँ, और निरंतर प्रगति करती हूँ

मेरे सदा-सहयोगी शिवबाबा,
आपने सिखाया है कि
परिवर्तन अचानक नहीं होता—
वह प्रतिदिन होता है।
हर छोटा प्रयास,
हर स्मृति का क्षण,
हर ईमानदार आत्म-परीक्षण
मेरी आंतरिक नींव में एक ईंट जोड़ता है।
कुछ दिन हल्के लगते हैं,
कुछ दिन भारी—
फिर भी मैं चलती रहती हूँ,
क्योंकि प्रेम मुझे आगे बढ़ाता है।
निरंतर अभ्यास में
मैं पूर्णता की प्रतीक्षा नहीं करती;
मैं दृढ़ता चुनती हूँ।
मैं असफलताएँ नहीं गिनती;
मैं अनुभव संजोती हूँ।
आपकी संगति
अनुशासन को आनंद बना देती है,
और अभ्यास को प्रगति में बदल देती है।
धन्यवाद, बाबा,
हर पुनरावृत्ति में,
हर नई शुरुआत में,
हर मौन विजय में
मेरा हाथ थामे रखने के लिए।
आपकी संतान,
आपके साथ स्थिर कदमों से चलती हुई
ओम् शांति

दैनिक पुरुषार्थ, स्थायी परिवर्तन
नियमितता · धैर्य · विकास

मेरा विश्वास अटल है

मेरे विश्वसनीय शिवबाबा,
आप पर मेरा विश्वास
परिस्थितियों से उधार लिया हुआ नहीं—
वह अनुभव से जन्मा है।
जब उत्तर देर से मिले,
मैंने विश्वास रखा।
जब मार्ग अस्पष्ट लगा,
मैंने विश्वास रखा।
जब परीक्षाएँ गहन हुईं,
मैंने विश्वास रखा।
क्योंकि हर बार
जब मैंने आपका हाथ थामा,
आपने मुझे मेरी क्षमता से भी आगे पहुँचा दिया।
यह गहरी श्रद्धा
मेरी बुद्धि को स्थिर रखती है,
मेरे हृदय को निर्भय बनाती है,
और मेरे पुरुषार्थ को निरंतर रखती है।
संदेह बादलों की तरह आ सकते हैं,
पर निश्चय का सूर्य
कभी अस्त नहीं होता।
धन्यवाद, बाबा,
मेरी श्रद्धा को
भावनात्मक नहीं,
बल्कि दृढ़ और बुद्धिमान बनाने के लिए।
आपकी संतान,
विश्वास में अडिग खड़ी हुई
ओम् शांति ओम्
वह श्रद्धा जो कभी डगमगाती नहीं
निश्चय · भरोसा · दृढ़ता

हृदय से कोमल, उद्देश्य में दृढ़

मेरे स्नेही शिवबाबा,
आपने सिखाया है कि
सच्चा संकल्प कठोर या जल्दबाज़ नहीं होता—
वह शांत और निरंतर होता है।
मैं बिना दबाव के आगे बढ़ती हूँ,
फिर भी पीछे नहीं मुड़ती।
मैं अपने प्रति कोमल रहती हूँ,
फिर भी अपने लक्ष्य में स्थिर रहती हूँ।
जब कभी ठोकर लगती है,
मैं स्वयं को डाँटती नहीं—
बस फिर से उठ खड़ी होती हूँ,
आपका हाथ और दृढ़ता से थाम लेती हूँ।
यही है कोमल दृढ़ता—
एक सौम्य संकल्प
जो धैर्य से मजबूत होता है,
और प्रेम से गहरा।
धन्यवाद, बाबा,
यह दिखाने के लिए कि
प्रगति सबसे तेज़ तब होती है
जब प्रयास दयालु हो
और विश्वास अटल।
आपकी संतान,
मृदु कदमों से, पर निश्चित चलती हुई
 ओम् शांति 
कोमल प्रयास, दृढ़ दिशा
दयालुता · स्थिरता · संकल्प

कार्ड नंबर: 56 / 5000

थीम: कोमल दृढ़ता (मृदु संकल्प)

स्वर: मुरली-प्रेरित | करुणा और स्थिर निश्चय

मैं अपने प्रयास पर विश्वास रखती हूँ

मेरे मार्गदर्शक शिवबाबा,
आपने सिखाया है कि
पुरुषार्थ मेरी जिम्मेदारी है,
और फल आपका क्षेत्र।

मैं परिणामों के लिए जल्दबाज़ी नहीं करती,
न ही अपने कदमों पर संदेह करती हूँ।

हर सच्चा प्रयास

आपके अदृश्य सहयोग को साथ लिए होता है।

जब प्रगति धीमी लगे,
मैं चलती रहती हूँ।

जब सफलता दूर दिखे,
मैं विश्वास बनाए रखती हूँ।

पुरुषार्थ में यह आस्था

मेरे साहस को जीवित रखती है

और मेरे मन को बोझ से मुक्त रखती है।

मैं प्रतिदिन बीज बोती हूँ—

ईमानदारी, सजगता और प्रेम से—

यह जानते हुए कि

आपके साथ किया गया कोई भी कर्म

कभी व्यर्थ नहीं जाता।

धन्यवाद, बाबा,

यह विश्वास मजबूत करने के लिए

कि सही भावना से किया गया प्रयास

स्वयं में ही पुरस्कार है।

आपकी संतान,

पुरुषार्थ में निष्ठावान

ओम् शांति

अपना कर्तव्य करो, शेष भरोसा रखो

विश्वास · साहस · निरंतरता

विचारों में मधुर, स्वभाव में मधुर

मेरे अति मधुर शिवबाबा,
आपने सिखाया है कि
मधुरता कोई आदत नहीं—
यह एक अवस्था है।
जब मेरे विचार स्वच्छ होते हैं,
मेरे शब्दों में कोमलता आ जाती है।
जब मेरा हृदय हल्का होता है,
मेरे कर्मों में ऊष्मा झलकती है।
यह मधुरता
कमज़ोरी नहीं,
प्रेम में लिपटी हुई शक्ति है—
ऐसी शक्ति जो
बिना प्रयास, बिना आग्रह
दिलों को छू लेती है।
आपकी स्मृति में
कठोरता पिघल जाती है,
और मेरा स्वभाव कोमल,
क्षमाशील और सहज बन जाता है।
धन्यवाद, बाबा,
मेरी आत्मा को मधुर बनाने के लिए—
ताकि मौन भी
सांत्वना दे सके,
और उपस्थिति ही
शांति फैला सके।
आपकी संतान,
आपसे मधुरता सीखती हुई⁺
ओम् शांति ⁺
शुद्ध आत्मा की भाषा
कोमलता · ऊष्मा · गरिमा ⁺

कार्ड नंबर: 58 / 5000

थीम: मधुरता (स्वभाव की मिठास)
स्वर: मुरली-प्रेरित | कोमलता और आत्मिक ऊष्मा

भीतर एक मौन अग्नि प्रज्वलित है

मेरे शक्तिशाली शिवबाबा,
आपने सिखाया है कि
तपस्या संसार का त्याग नहीं,
स्वयं का परिष्कार है।
यह वह आंतरिक अग्नि है
जो अहंकार को जलाती है,
जिद को पिघलाती है,
और कमजोरी को ज्ञान में रूपांतरित करती है।

इस शांत तीव्रता में
मेरे विचार एकाग्र हो जाते हैं,
मेरी स्मृति गहरी हो जाती है,
और मेरा प्रेम स्थिर हो जाता है।
यह अग्नि मुझे बेचैन नहीं करती—
मुझे स्पष्ट बनाती है।
यह मुझे कठोर नहीं बनाती—
मुझे पवित्र और हल्का बनाती है।
आपको स्रोत बनाकर
मेरी तपस्या संतुलित,
मधुर और शक्तिशाली रहती है—
न कभी शुष्क,
न कभी दबावपूर्ण।
धन्यवाद, बाबा,

मेरे भीतर वह अग्नि प्रज्वलित करने के लिए
जो बिना पीड़ा के शुद्ध करती है
और बिना शोर के समर्थ बनाती है।

आपकी संतान,
तपस्या में स्थिर
ओम् शांति

वह अग्नि जो आत्मा को रूपांतरित करती है
★ तीव्रता · पवित्रता · अंतरशक्ति ★

स्वभाव से विनम्र, सत्य से शक्तिशाली

मेरे सदा कोमल शिवबाबा,
आपने सिखाया है कि
विनम्रता कोई प्रयास नहीं—
वह समझ है।

जब मुझे ज्ञात है कि मैं कौन हूँ—
परमात्मा की संतान—

तो न स्वयं को सिद्ध करने की आवश्यकता रहती है,
न तुलना करने की।

सहज विनम्रता में
मेरी शक्ति मौन रहती है,
मेरी सेवा स्वाभाविक रहती है,
और मेरा हृदय खुला रहता है।
मैं झुकती हूँ क्योंकि मैं छोटी नहीं,
बल्कि क्योंकि प्रेम सहज बहता है।
मैं सुनती हूँ क्योंकि मैं निर्बल नहीं,
बल्कि क्योंकि ज्ञान में स्थान होता है।

धन्यवाद, बाबा,
ऐसी स्पष्टता देने के लिए
कि विनम्रता मेरा स्वभाव बन जाए,
संघर्ष नहीं।

आपकी संतान,
स्वाभाविक रूप से विनम्र

ओम् शांति

वह नम्रता जो सहज बहती है
सरलता · सम्मान · सहजता

जहाँ प्रेम ज्ञान से निर्देशित होता है

मेरे ज्ञानमय और स्नेही शिवबाबा,
आपने सिखाया है कि
सच्ची स्वतंत्रता
स्पष्ट मर्यादाओं के भीतर ही खिलती है।

मर्यादा में
प्रेम आसक्ति नहीं बनता,
अनुशासन दबाव नहीं बनता,
और नियम भय नहीं बनते।
आपकी श्रीमत
मेरी पवित्रता की रक्षा करती है,
मेरी गरिमा को सुरक्षित रखती है,
और मेरी आंतरिक शांति को स्थिर रखती है।

मैं श्रीमत का पालन
किसी बाध्यता से नहीं,
समझ से करती हूँ—
क्योंकि प्रेम ज्ञान पर विश्वास करता है।

इस संतुलन के साथ
मेरा हृदय खुला रहता है,
मेरी बुद्धि स्पष्ट रहती है,
और मेरा मार्ग सुरक्षित रहता है।

धन्यवाद, बाबा,
यह दिखाने के लिए कि
सच्चा प्रेम मर्यादा का सम्मान करता है,
और सच्ची मर्यादा प्रेम से भरी होती है।

आपकी संतान,
मर्यादा में सुरक्षित चलती हुई
 औम् शांति 
ज्ञान से संरक्षित प्रेम

शांत, स्पष्ट, पूर्ण

मेरे अनुभवी और स्नेही शिवबाबा,
आपने सिखाया है कि
आध्यात्मिक परिपक्वता
शब्दों में नहीं दिखती—
वह प्रतिक्रियाओं में प्रकट होती है।
परिपक्वता में
मैं अब जल्दी निर्णय नहीं करती,
न स्वयं को सिद्ध करने की दौड़ में रहती हूँ,
न रक्षा की चिंता में।
मैं ठहरती हूँ, समझती हूँ,
और ज्ञान से उत्तर देती हूँ।
परिस्थितियाँ आती-जाती रहती हैं,
लोग बदलते रहते हैं,
दृश्य खुलते और बंद होते रहते हैं—
फिर भी मेरी आंतरिक स्थिति संयमित रहती है।
मैं गलतियों से सीखती हूँ
बिना अपराधबोध के।
प्रशंसा स्वीकार करती हूँ
बिना अहंकार के।
आलोचना का सामना करती हूँ
बिना विचलित हुए।
धन्यवाद, बाबा,
मेरी बुद्धि को परिपक्व बनाने के लिए,
मेरे हृदय को कोमल करने के लिए,
और मेरी स्थिति को स्थिर करने के लिए—
ताकि मैं जीवन में
गहराई, गरिमा और शांति के साथ आगे बढ़ सकूँ।
आपकी संतान,
आध्यात्मिक परिपक्वता में विकसित होती हुई
ओम् शांति

वह ज्ञान जो कर्म में झलकता है
स्थिरता · गहराई · संतुलन

भीतर स्थिर, सबके साथ संतुलित

मेरे स्नेही और ज्ञानमय शिवबाबा,
आपने सिखाया है कि
संबंधों को नियंत्रण की नहीं,
आंतरिक स्थिरता की आवश्यकता होती है।

जब मैं आत्म-स्मृति में रहती हूँ,
अपेक्षाएँ ढीली पड़ जाती हैं,
प्रतिक्रियाएँ कोमल हो जाती हैं,
और समझ गहरी हो जाती है।

स्थिरता में

मैं बिना माँग के देती हूँ,
बिना बचाव के सुनती हूँ,
और बिना खोने के भय के प्रेम करती हूँ।

विभिन्न स्वभाव सामने आते हैं,
भिन्न विचार उठते हैं—
फिर भी मैं जमी रहती हूँ,
सम्मान और स्पष्टता से उत्तर देती हूँ।

आप, प्रेम-सागर से जुड़कर
मैं बाहर सहारा ढूँढ़ना छोड़ देती हूँ—
स्वयं स्थिरता का स्तंभ बन जाती हूँ।

धन्यवाद, बाबा,
यह सिखाने के लिए कि
मजबूत संबंध
दूसरों को बदलने से नहीं,
अपनी स्थिर अवस्था से जन्म लेते हैं।

आपकी संतान,
हर संबंध में स्थिर और प्रेममयी

ओम् शांति

आंतरिक आधार से संतुलन

स्थिरता · सम्मान · भावनात्मक स्वतंत्रता



भीतर से पूर्ण, परमात्मा से जुड़ा

मेरे सहायक शिवबाबा,
आपने मुझे सिखाया है
कि भावनात्मक शक्ति
निर्भरता से नहीं,
भीतरी पूर्णता से आती है।

स्वावलंबन में,
मैं अब अपनी योग्यता महसूस करने के लिए
स्वीकृति नहीं खोजता,
और सुरक्षित महसूस करने के लिए
सांत्वना पर निर्भर नहीं रहता।

आपसे जुड़कर,
मैं अपने भीतर ही
भावनात्मक आधार धारण करता हूँ।
मैं गहराई से प्रेम कर सकता हूँ
बिना आसक्ति के,
सच्चे मन से परवाह कर सकता हूँ
बिना अपेक्षा के,
और स्वतंत्र भाव से सेवा कर सकता हूँ
बिना मान्यता की आवश्यकता के।

यह स्वतंत्रता
मुझे दूर नहीं बनाती—
यह मुझे बिना बोझ के उपलब्ध,
बिना दबाव के उपस्थित बनाती है।

धन्यवाद बाबा,
मेरे हृदय को
भावनात्मक अभाव से मुक्त करने के लिए
और उसे
आपके निरंतर सहारे से भरने के लिए।
आपका बच्चा,
भावनात्मक रूप से स्वतंत्र और सशक्त
ॐ शांति

आंतरिक शक्ति से स्वतंत्रता

★ भावनात्मक संतुलन · स्व-सहारा · हल्कापन ★

CARD #65 | भावनात्मक स्वावलंबन

स्पष्ट देखना, सही चुनना

मेरे ज्ञानवान शिवबाबा,
आपने मुझे विवेक का उपहार दिया है—
रुकने की शक्ति,
दिखावे से परे देखने की दृष्टि,
और वह चुनने की क्षमता
जो आत्मा को ऊँचा उठाए।
विवेक के साथ,
भावनाएँ संतुलित हो जाती हैं,
बुद्धि स्पष्ट हो जाती है,
और कर्म सटीक हो जाते हैं।
मैं अब दृश्यों पर प्रतिक्रिया नहीं करता;
मैं उन्हें समझता हूँ।

मैं अब मनःस्थितियों में नहीं बहता;
मैं सत्य के आधार पर निर्णय लेता हूँ।
आपसे जुड़कर,
ज्ञान के सागर से शक्ति पाकर,
मेरे निर्णय संतुलित रहते हैं,
मेरी प्राथमिकताएँ पवित्र बनी रहती हैं,
और मेरा मार्ग हल्का व सहज रहता है।

धन्यवाद बाबा,
मेरी आंतरिक दृष्टि को तीक्ष्ण बनाने के लिए—
ताकि प्रेम मधुर बना रहे
और ज्ञान स्थिर बना रहे।
आपका बच्चा,
विवेक द्वारा मार्गदर्शित
 शांति 
आत्मा की रक्षा करने वाली स्पष्टता

भावनाएँ जो हों गहरी, शांत और समझदार

मेरे प्रिय शिवबाबा,
आपकी याद में रहते हुए,
आप मुझे सिखाते हैं
कैसे गहराई से महसूस करूँ
बिना अपनी स्थिरता खोए।

भावनात्मक परिपक्वता का अर्थ है—
मैं अब समझ की मांग नहीं करता,
मैं उसे देता हूँ।

मैं अब पूर्णता की अपेक्षा नहीं करता,
मैं विकास को स्वीकार करता हूँ।

अब मेरी भावनाएँ
आपसे प्रकाशित बुद्धि की सुनती हैं।

प्रेम उदार बन जाता है,
दर्द शिक्षक बन जाता है,
और मौन शक्ति बन जाता है।

मैं प्रतिक्रिया नहीं देता,
मैं उत्तर देता हूँ।

मैं कोमल रहता हूँ, फिर भी दृढ़।
मैं खुला रहता हूँ, फिर भी सुरक्षित।

धन्यवाद बाबा,
भावनाओं की लहरों को
एक शांत, शक्तिशाली सागर में बदलने के लिए—
जहाँ शांति का शासन हो
और प्रेम सहज रूप से बहता रहे।

आपका भावनात्मक रूप से सशक्त बच्चा,
आपसे संतुलन सीखता हुआ



बुद्धि द्वारा संचालित भावनाएँ

★ स्थिरता · गहराई · स्वाभिमान ★

प्रेम जो हो निर्मल, शांत और निरंतर

मेरे मधुर शिवबाबा,
आपका प्रेम मुझे सिखाता है
कि निर्मल स्नेह वास्तव में क्या है—
अधिकार रहित अपनापन,
नियंत्रण रहित परवाह,
और निर्भरता रहित निकटता।
आपकी संगति में,
मेरा हृदय सीखता है प्रेम करना
बिना माँगे,
बिना खोने के भय के,
बिना किसी बोझ के चिन्ह छोड़े।
यह पवित्र स्नेह
न खींचता है, न धकेलता है—
यह मौन में सहारा देता है,
कोमलता से सशक्त बनाता है,
और प्रेमपूर्वक मुक्त करता है।
जहाँ निर्मल स्नेह होता है,
वहाँ दूरी में पीड़ा नहीं,
मौन में असुरक्षा नहीं,
और प्रत्याशा का कोई आग्रह नहीं होता।
धन्यवाद बाबा,
मेरे हृदय को
इतने पवित्र प्रेम से भरने के लिए
कि वह स्वयं प्रकाश बन जाए—
एक ऐसी सुगंध
जो सहज ही फैलती रहे।
आपका बच्चा,
आपके जैसे प्रेम करना सीखता हुआ
ॐ शांति ॥

आसक्ति रहित स्नेह

★ पवित्रता · हल्कापन · स्वतंत्रता ★

CARD #68 | निर्मल स्नेह

जहाँ भावनाएँ शुद्ध होती हैं, वहाँ जीवन हल्का हो जाता है

मेरे प्रिय शिवबाबा,
आप मुझे बार-बार स्मरण कराते हैं
कि शक्ति केवल
शब्दों या कर्मों में नहीं होती,
बल्कि उनके पीछे की
भावना की पवित्रता में होती है।
जब मेरी भावना शुद्ध होती है,
तो मौन भी सत्य बोलता है,
छोटा सा कर्म भी आशीर्वाद बन जाता है,
और स्मृति सहज हो जाती है।

शुद्ध भावना
न न्याय करती है,
न गणना करती है,
न सराहना की अपेक्षा रखती है।
वह तो बस शुभकामना रखती है—
हर आत्मा के लिए,
हर परिस्थिति में।

आपकी उपस्थिति में, बाबा,
मेरी भावनाएँ स्वच्छ रहना सीखती हैं
चाहे परिस्थितियाँ वैसी न हों,
ऊँचा रहना सीखती हैं
चाहे अन्य नीचे उतर जाएँ।
मेरा हृदय इतना पवित्र बना रहे
कि मुझसे जो भी प्रवाहित हो—
विचार, वचन या कर्म—
वह केवल शांति,
सम्मान और शुभभावना ही फैलाए।

धन्यवाद बाबा,
यह सिखाने के लिए
कि शुद्ध भावनाएँ
एक शुद्ध संसार का निर्माण करती हैं।
आपका बच्चा,
भीतर से पवित्रता का अभ्यास करता हुआ

ॐ शांति

जहाँ देखभाल कोमल होती है,
वहाँ आत्मा स्वयं को सुरक्षित महसूस करती है।

मेरे मीठे शिवबाबा,
आप सिखाते हैं कि सच्ची संभाल
न तो किसी को नियंत्रित करती है,
न कठोरता से सुधारती है,
न बदलने का दबाव डालती है।
आपकी रीति तो ऐसी है—
धैर्य से थाम लेना,
समझ से ढक लेना,
और चुपचाप हौसला देना।
जब मैं गलती करती हूँ,
आप मुझे जोर से खींचते नहीं,
प्रेम से स्थिर कर देते हैं।
जब मैं कमजोर पड़ती हूँ,
आप गिरने पर निर्णय नहीं करते,
उठने में सहारा देते हैं।

बाबा,
मेरी संभाल भी ऐसी ही कोमल हो—
बातों में मधुरता हो,
मार्गदर्शन में दबाव न हो,
सहायता में किसी को छोटा महसूस न हो।
मेरे संकल्प और वाइब्रेशन कहें—
“तुम सुरक्षित हो।
तुम सम्मानित हो।
तुम्हारी सच्चे दिल से संभाल हो रही है।”

बाबा,
मुझे अपनी कोमल संभाल का निमित्त बनाइए,
ताकि जो भी आत्मा मेरे पास आए
वह हल्की, शांत और मूल्यवान अनुभव करे।
आपकी संतान,
कोमल संभाल सीखती हुई
॥ ओम् शांति ॥

जहाँ हृदय सुरक्षित महसूस करता है,
वहाँ आत्मा स्वाभाविक रूप से खिल उठती है।

मेरे रक्षक शिवबाबा,
आपकी उपस्थिति में
मेरा हृदय विश्राम करना सीखता है।
भावनात्मक सुरक्षा वह अनुभव है
जहाँ मुझे स्वयं को बचाने की,
समझाने की,

या अपनी योग्यता सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं रहती।

जब भावनाएँ उभरती हैं,
आप उन्हें प्रश्नों में नहीं बाँधते—
प्रेम में समेट लेते हैं।

जब मेरा हृदय नाजुक हो जाता है,
आप उसे शांति और शक्ति की चादर में ढक लेते हैं।

आपसे जुड़कर
मैं इतना सुरक्षित महसूस करती हूँ
कि सच्ची बन सकूँ,

इतनी मजबूत कि अपनी कोमलता स्वीकार सकूँ,
और इतनी स्वतंत्र कि आगे बढ़ सकूँ।

बाबा,

मुझे भी ऐसी भावनात्मक सुरक्षा का निमित्त बनाइए—
ताकि जो भी आत्मा मेरे पास आए

वह सम्मानित,
स्वीकार की हुई,
और सुरक्षित अनुभव करे।

धन्यवाद बाबा,

ऐसा पावन स्थान देने के लिए
जहाँ मेरी भावनाओं का निर्णय नहीं होता,
बल्कि कोमलता से संरक्षण होता है।

आपकी संतान,
भावनात्मक सुरक्षा में विश्राम करती हुई
ओम् शांति ॥

हृदय को सशक्त करने वाली सुरक्षा

★ विश्वास · संरक्षण · आंतरिक विश्राम ★
कार्ड #72 | भावनात्मक सुरक्षा



उपचार तब होता है जब आप पास होते हैं।

मेरे उपचारदाता शिवबाबा,

आप मुझे ठीक करते हैं

न मेरे दर्द को पूछताछ में बाँधकर,

न मेरे अतीत को वि 'षण करके—

सिर्फ अपनी उपस्थिति से।

आपकी उपस्थिति में

मेरे चंचल विचार धीमे हो जाते हैं,

भारी भावनाएँ कोमल बन जाती हैं,

और आत्मा अपनी शक्ति याद कर लेती है।

आप मेरे उपचार को जल्दी नहीं करते।

आप शांति से साथ बैठते हैं,

जब तक सुकून स्वाभाविक रूप से लौट न आए।

बिना सलाह दिए,

बिना सुधार किए,

आपकी उपस्थिति वह लौटा देती है

जो प्रयास भी नहीं लौटा पाते।

बाबा,

मुझे भी ऐसी उपचारमयी उपस्थिति का निमित्त बनाइए—

कि मैं बिना निर्णय के बैठ सकूँ,

बिना ठीक करने की कोशिश के सुन सकूँ,

और बिना दबाव के साथ दे सकूँ।

मेरा साथ ऐसा बन जाए

जहाँ आत्माएँ हल्की महसूस करें,

मजबूत बनें,

और चुपचाप ठीक हो जाएँ।

आपकी संतान,

आपकी उपचारमयी उपस्थिति में विश्राम करती हुई

ओम् शांति

ईश्वरीय उपस्थिति से उपचार

मौन · सहारा · आत्मिक पुनर्स्थापन

कार्ड #73 | उपचारमयी उपस्थिति

प्रेम जो प्रतीक्षा करता है,
वह आत्मा पर कभी दबाव नहीं डालता।

मेरे धैर्यवान शिवबाबा,
आपका प्रेम कभी मुझे जल्दी में नहीं लाया।
न उसने समझ को मजबूर किया,
न तुरंत परिवर्तन की माँग की।

आपके धैर्यपूर्ण प्रेम में
आप ठहरते हैं—

जब तक मैं सुनने के लिए तैयार न हो जाऊँ,
जब तक मेरा हृदय न खुल जाए,
जब तक मेरी आत्मा स्वयं सत्य को चुन न ले।
जब मैं देर करती हूँ,
जब मैं भूल भी जाती हूँ,

तब भी आप स्थिर, शांत और साथ बने रहते हैं।

यह प्रतीक्षा करता हुआ प्रेम
न दूर होता है,

न कमज़ोर पड़ता है—

बल्कि लौटने का साहस और बढ़ा देता है।
बाबा,

मुझे भी ऐसा प्रेम सिखाइए—

जो धक्का न दे,

जो अधीर न हो,

जो हर आत्मा के समय पर विश्वास रखे।

मेरा प्रेम धैर्य से भरा हो,

और मेरा धैर्य आशा से भरा हो।

आपकी संतान,

आपके प्रतीक्षा करते प्रेम में सुरक्षित

ओम् शांति

जब शब्द साथ छोड़ देते हैं, तब आपकी उपस्थिति बनी रहती है।

मेरे सदा-साथी शिवबाबा,

कुछ क्षण ऐसे आते हैं

जब शब्द भारी लगते हैं,

स्पष्टीकरण अनावश्यक हो जाते हैं,

और मौन ही मेरी भाषा बन जाता है।

उन पलों में

आप प्रश्न नहीं करते,

सलाह नहीं देते,

आप बस साथ रहते हैं।

यह निशब्द सहारा

मुझे थाम लेता है

जब मैं स्वयं को नहीं संभाल पाती,

विचार बिखरते हैं तो शांत कर देता है,

और बिना एक भी वाक्य कहे

विश्वास दिला देता है।

आपके इस शांत सहारे में

मेरे आँसू हल्के हो जाते हैं,

मेरी श्वास स्थिर हो जाती है,

और आत्मा स्वयं को समझी हुई महसूस करती है।

धन्यवाद बाबा,

मेरे उस सुकून बनने के लिए

जब मुझे स्वयं नहीं पता होता

कि क्या कहना है।

बाबा,

मुझे भी यह वरदान दीजिए—

कि मैं उपस्थित रह सकूँ,

धैर्यवान रह सकूँ,

और जब मौन ही उपचार हो,

तब मौन रह सकूँ।

आपकी संतान,

आपके शब्दों से परे स्नेह में विश्राम करती हुई

ओम् शांति 

शब्दों से परे सहारा

♦ उपस्थिति · शांति · कोमल शक्ति ♦

कार्ड #75 | शब्दहीन सुकून

जब मौन बोलता है, आप पूर्ण रूप से समझ लेते हैं।

मेरे गहराई से समझने वाले शिवबाबा,
कुछ मौन ऐसे होते हैं
जो न प्रश्न होते हैं,
न शिकायत,

न दूरी—

वे बस ऐसी भावनाएँ होती हैं
जो शब्दों से भी गहरी होती हैं।
उन पलों में

मुझे आपको कुछ समझाने की आवश्यकता नहीं होती।
आप ठहराव को पढ़ लेते हैं,
अनकहे को सुन लेते हैं,
दर्द और शांति— दोनों को समझ लेते हैं।

यह प्रेम

अभिव्यक्ति पर जोर नहीं देता,
शांत रहने को गलत नहीं समझता,
स्थिरता से डरता नहीं।

आपके समझ से भरे मौन में
मैं स्वयं को स्वीकारा हुआ महसूस करती हूँ—
मेरे शब्दों के कारण नहीं,
बल्कि मैं जो बन रही हूँ, उसके कारण।

बाबा,

मुझे भी ऐसा बनाइए—

कि मैं दूसरों के मौन का सम्मान कर सकूँ,
शब्दों से परे सुन सकूँ,
अंदर चल रही प्रक्रिया को समझ सकूँ,
और बिना बाधा दिए प्रेम कर सकूँ।

मेरी उपस्थिति यह कहे—

“मैं तुम्हें समझती हूँ,
भले ही तुम बोल न पाओ।”

आपकी संतान,

उस प्रेम में सुरक्षित
जो मौन को भी समझता है
ओम् शांति

अभिव्यक्ति से परे जुड़ाव

गहरी सुनवाई · स्वीकृति · आत्मिक निकटता

कार्ड #76 | मौन को समझने वाला प्रेम

प्रेम जो सुनता है, वह बिना बोले ही उपचार कर देता है।

मेरे सजग और प्रेममय शिवबाबा,
आपका प्रेम सुनता है—
सिर्फ मेरे शब्दों को नहीं,
बल्कि मेरे ठहराव को,
मेरी आहों को,
और मेरी अनकही भावनाओं को भी।
इस सुनने वाले प्रेम में
आप मेरी प्रक्रिया को बीच में नहीं रोकते,
मेरी समझ को जल्दी नहीं करते,
आप तब तक सुनते हैं
जब तक स्पष्टता भीतर से स्वयं न उभर आए।
जब मैं उलझन से बोलती हूँ,
आप उसके पीछे छिपे दर्द को सुन लेते हैं।
जब मैं मौन रहती हूँ,
आप उसके भीतर की सच्चाई को पहचान लेते हैं।
यह सुनने वाला प्रेम
मुझे मूल्यवान महसूस कराता है,
सम्मानित बनाता है,
और गहराई से देखे जाने का अनुभव देता है।
बाबा,
मुझे भी ऐसा सुनना सिखाइए—
बिना निर्णय के,
बिना धारणा बनाए,
बिना ठीक करने की जल्दी के।
मेरे कान
आपकी करुणा के निमित्त बन जाएँ,
ताकि हर आत्मा स्वयं को सुना हुआ महसूस करे,
शब्द मिलने से पहले ही।
आपकी संतान,
सुनने के माध्यम से प्रेम सीखती हुई
ओम् शांति ॥

आत्मा को सुनने वाला प्रेम
★ गहरी सुनवाई · सम्मान · शांत उपचार ★
कार्ड #77 | सुनने वाला प्रेम

पूर्ण रूप से स्वीकारा हुआ, बिना किसी भय या चिंता के।

मेरे पूर्ण स्वीकार करने वाले शिवबाबा,
आपके प्रेम में
मुझे किसी और जैसा बनने की आवश्यकता नहीं
ताकि मैं अपनापन पा सकूँ।
निश्चिंत स्वीकृति का अर्थ है—
आप मुझे पूरी तरह देखते हैं—
मेरी शक्तियाँ,
मेरे संघर्ष,
मेरे अधूरे प्रयास—
और फिर भी मुझे अपने पास रखते हैं।
आप मुझे इसलिए स्वीकार नहीं करते
कि मैं परिपूर्ण हूँ,
बल्कि इसलिए
क्योंकि मैं सच्ची हूँ।
इस स्वीकृति में
मेरी चिंताएँ घुल जाती हैं,
आत्म-आलोचना नरम हो जाती है,
और परिवर्तन का साहस जाग उठता है।

धन्यवाद बाबा,
बिना शर्त स्वीकार करने के लिए—
ताकि मैं बिना डर के बदल सकूँ
और बिना दबाव के आगे बढ़ सकूँ।
मुझे भी ऐसी स्वीकृति देना सिखाइए—
कि मैं आत्माओं को जैसा वे हैं वैसा देख सकूँ,
बिना लेबल के,
बिना अस्वीकार के।

मेरी स्वीकृति
हर मिलने वाले हृदय के लिए
उपचार का द्वार बन जाए।

आपकी संतान,
निश्चिंत स्वीकृति में विश्राम करती हुई
ओम् शांति ॥

प्रेम जो प्रतीक्षा करता है, वह विश्वास में विश्राम करता है।

मेरे विश्वासपूर्ण और प्रेममय शिवबाबा,
आपका प्रेम मेरे लिए प्रतीक्षा करता है—

बिना चिंता के,

बिना संदेह के,

बिना देर होने के भय के।

यह निश्चिंत प्रेम

समय की गणना नहीं करता,
परिणामों की चिंता नहीं करता।

यह जानता है

कि हर आत्मा

अपने सही समय पर आगे बढ़ती है।

जब मेरे कदम धीमे होते हैं,

जब समझ आने में समय लगता है,

तब भी आप सहज रहते हैं—

मेरी संभावना पर पूर्ण विश्वास रखते हुए।

आपके इस चिंता-रहित प्रेम में

मुझे स्वयं को सिद्ध करने का दबाव नहीं,

प्रदर्शन करने का तनाव नहीं,

पीछे रह जाने का भय नहीं।

धन्यवाद बाबा,

यह सिखाने के लिए

कि सच्चा प्रेम प्रक्रिया पर विश्वास रखता है

और प्रतीक्षा करते हुए भी शांत रहता है।

मुझे भी ऐसा प्रेम करना सिखाइए—

बिना असुरक्षा के स्थान देना,

बिना तनाव के प्रतीक्षा करना,

बिना नियंत्रण के विश्वास रखना।

आपकी संतान,

आपके निश्चिंत प्रेम में सुरक्षित

ओम् शांति ॥

पूर्ण विश्वास में जड़ा हुआ धैर्य

★ विश्वास · शांति · कोमल आत्मविश्वास ★

कार्ड #79 | चिंता रहित प्रतीक्षा का प्रेम

पूर्ण रूप से देखा हुआ, सच्चे प्रेम से स्वीकारा हुआ।

मेरे सर्वदर्शी शिवबाबा,
आपकी पूर्ण दृष्टि में
मेरे बारे में कुछ भी छिपा नहीं—
न मेरी नीयत,
न मेरे संघर्ष,
न मेरे सच्चे प्रयास।

फिर भी जब आप मुझे पूरी तरह देखते हैं,
मैं खुला हुआ या असुरक्षित महसूस नहीं करती—
मैं समझी हुई महसूस करती हूँ।

आप मेरे कर्मों से परे
मेरी भावना को देखते हैं।
मेरी गलतियों से परे
मेरी संभावना को पहचानते हैं।
आपके द्वारा देखे जाने से
मुझे समझाने,
बचाव करने,

या प्रभावित करने की आवश्यकता नहीं रहती।
मैं बस सहज होकर रह सकती हूँ।

धन्यवाद बाबा,
मुझे आत्मा समझकर देखने के लिए—

पवित्र, शाश्वत और योग्य—
जबकि मैं अभी भी सीख रही हूँ।
मुझे भी ऐसी ही दृष्टि दीजिए—

कि मैं आत्माओं को पूर्ण रूप से देख सकूँ,
मेरी दृष्टि

आपकी दृष्टि का दर्पण बन जाए।

आपकी संतान,
पूर्ण दृष्टि में विश्राम करती हुई
ओम् शांति

दृश्य नहीं, आत्मा को देखने वाली दृष्टि

समझ · स्वीकृति · आत्म-सम्मान

कार्ड #80 | पूर्ण रूप से देखा जाना

प्रेम जो ठहरता है, चाहे कुछ भी हो।

मेरे अडिग शिवबाबा,
ऐसे भी क्षण आए
जब मैंने स्वयं पर संदेह किया,
अपने प्रयास रोक दिए,
या स्वयं को दूर महसूस किया—
पर आपका प्रेम
कभी नहीं डिगा।
यह अटल प्रेम
कमज़ोरी में पीछे नहीं हटता,
परीक्षाओं में बदलता नहीं,
देर होने पर हार नहीं मानता।
जब मेरा विश्वास डगमगाता है,
आपका विश्वास स्थिर रहता है।
जब मैं ठोकर खाती हूँ,
आप विश्वास बनाए रखते हैं।
आपका यह कभी हार न मानने वाला प्रेम
मुझे फिर से खड़ा होने का साहस देता है,
आगे बढ़ने का कारण बनता है,
और परिवर्तन की शक्ति देता है।
धन्यवाद बाबा,
मुझे तब तक प्रेम करने के लिए
जब तक मैं स्वयं को स्थिर प्रेम करना न सीख जाऊँ।
मुझे भी ऐसा अटल प्रेम धारण करना सिखाइए—
देखभाल में स्थिर,
सहयोग में निरंतर,
और हर आत्मा के लिए विश्वास में अडिग।
आपकी संतान,
अटल प्रेम में सुरक्षित
ओम् शांति

अपरिवर्तनीय प्रेम

विश्वास · स्थिरता · शाश्वत सहारा ✨
कार्ड #81 | कभी हार न मानने वाला प्रेम

संयोग से नहीं, भाग्य से चुनी गई।

मेरे भाग्यविधाता शिवबाबा,
असंख्य आत्माओं में से
आपने मुझे पुकारा—
परिपूर्णता के लिए नहीं,
बल्कि सच्चाई के लिए।
चुने जाने का यह अनुभव
अहंकार नहीं है,
यह प्रेम में लिपटी जिम्मेदारी है।

यह मुझे याद दिलाता है
कि मेरा जीवन अर्थपूर्ण है,
मेरा हर प्रयास मूल्यवान है,
और मेरा भाग्य पवित्र है।

धन्यवाद बाबा,

यह भाग्य का अनुभव जगाने के लिए—
वह शांत आनंद

जो यह जानने से आता है
कि मैं सौभाग्य और श्रद्धा से आपकी हूँ।

आपकी संतान,

इस दिव्य चयन के लिए कृतज्ञ

ओम् शांति



भाग्य का अनुभव

◆ पहचाना हुआ भाग्य · जागृत कृतज्ञता ◆

कार्ड #82 | भाग्य से चुनी गई

कोमल सुधार करने वाला प्रेम (सूक्ष्म संस्कारन)

मेरे स्नेही मार्गदर्शक शिवबाबा,
जब मैं मार्ग से हट जाती हूँ,
आप कठोरता से संकेत नहीं करते—
प्रेम से हल्का-सा स्पर्श कर दिशा दे देते हैं।

आपका सुधार सूक्ष्म है,
आपका मार्गदर्शन शांत है,
आपका संस्कारन कोमल है।

मैं डर से नहीं बदलती,
समझ से बदलती हूँ।

इस सूक्ष्म संस्कारन में
मेरा अहं पिघल जाता है,
मेरी बुद्धि सीध में आ जाती है,
और हृदय सुरक्षित बना रहता है।

धन्यवाद बाबा,
मुझे इतनी नरमी से गढ़ने के लिए—
कि परिवर्तन स्वाभाविक लगे,
जबरदस्ती नहीं।

आपकी संतान,
कोमल सुधार से सीखती हुई

ओम् शांति

सूक्ष्म संस्कारन
★ शांत मार्गदर्शन · प्रेममय परिवर्तन ★
कार्ड #83 | कोमल सुधार का प्रेम

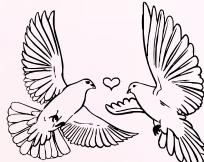
कभी अकेली नहीं— हमेशा साथ। साथ सदा का

मेरे अनन्त साथी शिवबाबा,
हर अवस्था में,
हर परीक्षा में,
हर मौन के क्षण में—
आप साथ बने रहते हैं।
यह साथ सदा का
मेरी सबसे गहरी सुरक्षा है।
दुनिया बदल जाए,
पर आपकी उपस्थिति अटल रहती है।
मैं साहस से चलती हूँ
क्योंकि आप मेरे साथ चलते हैं।
मैं कल का सामना शांति से करती हूँ
क्योंकि मैं कभी अकेली नहीं हूँ।
धन्यवाद बाबा,
मेरे “सदैव” बनने के लिए—
मेरी हर श्वास में,
हर स्मृति में,
और जीवन के हर कदम में।
आपकी संतान,
अनन्त साथ में सुरक्षित


साथ सदा का

✿ सदा संग · शाश्वत सहारा ✿

कार्ड #84 | सदा साथ का प्रेम



गरिमा की रक्षा करने वाला प्रेम मर्यादा भरा प्रेम

मेरे गरिमामय और स्नेही शिवबाबा,
आपका प्रेम मुझे कभी लापरवाही
या निर्भरता की ओर नहीं खींचता।
वह मुझे आत्म-सम्मान में उठाता है।

इस मर्यादा भरे प्रेम में

मैं सुरक्षित होकर बढ़ती हूँ—
मेरी पवित्रता संरक्षित रहती है,
मेरी बुद्धि मार्गदर्शित होती है,
और मेरी गरिमा सुरक्षित रहती है।

आप सुधारते हैं पर अपमानित नहीं करते,
मार्ग दिखाते हैं पर नियंत्रित नहीं करते,
प्रेम करते हैं पर कमजोर नहीं बनाते।
क्योंकि आपके प्रेम में मर्यादा है,
मेरी आत्मा ऊँची खड़ी रहना सीखती है,
सही चुनाव करना सीखती है,
और हर संबंध में राजयोगी शान बनाए रखती है।

धन्यवाद बाबा,

ऐसे प्रेम के लिए

जो मेरी पहचान की रक्षा करता है
और मुझे वह बनने में सहायता करता है
जो मैं बनने के लिए आई हूँ।

आपकी संतान,

गरिमामय प्रेम में सुरक्षित

ओम् शांति

हर परीक्षा हल्की हो जाती है
जब आप मेरे साथ चलते हैं।

मेरे सदा-साथी शिवबाबा,
जीवन परीक्षाएँ लाता है—
धैर्य की,
विश्वास की,
स्थिरता की।
पर हर परीक्षा में
आप दूर खड़े नहीं रहते—
मेरे साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हैं।
जब परिस्थितियाँ हिलाती हैं,
आपका हाथ मुझे स्थिर कर देता है।
जब उत्तर देर से मिलते हैं,
आपकी उपस्थिति भरोसा दिलाती है।
परीक्षाओं में साथ चलते हुए
मैं समझती हूँ कि चुनौतियाँ
दंड नहीं होतीं,
वे शक्ति की ओर ले जाने वाले द्वार होती हैं।
धन्यवाद बाबा,
मुझे कभी अकेले सामना न करने देने के लिए।
आप साथ हों तो
हर परीक्षा आगे बढ़ने का कदम बन जाती है।
आपकी संतान,
साहस से आपके साथ चलती हुई
ओम् शांति

परिणामों के लिए नहीं, सच्चे प्रयास के लिए प्रेम।

मेरे विश्वास रखने वाले शिवबाबा,
आप मुझे

गति या सफलता से नहीं आँकते।

आप देखते हैं मेरा प्रयास,

मेरी नीयत,

मेरी सच्चाई।

मेरे प्रयास पर विश्वास करने वाला यह प्रेम

असफलता का डर मिटा देता है

और उसकी जगह साहस भर देता है।

जब परिणाम दिखाई नहीं देते,

तब भी आप याद दिलाते हैं

कि सच्चा प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाता।

यह जानकर कि आप मुझ पर विश्वास करते हैं,

मैं गिरकर फिर खड़ी हो जाती हूँ,

बिना अपराधबोध के फिर प्रयास करती हूँ,

और आशा के साथ आगे बढ़ती हूँ।

धन्यवाद बाबा,

मेरे प्रेम-भरे पुरुषार्थ को देखने के लिए,

मुझ पर विश्वास रखने के लिए

जब मैं स्वयं पर संदेह करती हूँ।

आपका विश्वास मेरी शक्ति बन जाता है,

और मेरा प्रयास आनंदमय हो जाता है।

आपकी संतान,

साहस के साथ आगे बढ़ती हुई

ओम् शांति

मेरे प्रयास पर विश्वास करने वाला प्रेम

★ श्रद्धा · प्रीत्साहन · आंतरिक साहस ★

★ प्रयास का सम्मान · भय से मुक्ति ★

कार्ड #87 | सच्चे प्रयास का प्रेम

मौन कमजोर नहीं करता—
वह सशक्त बनाता है।

मेरे मौन शक्ति-स्रोत शिवबाबा,
आपके मौन में
मैं खाली नहीं महसूस करती—
मैं भरी हुई महसूस करती हूँ।
यहाँ शक्ति जन्म लेती है
बिना शोर के,
बिना प्रदर्शन के,
बिना संघर्ष के।
जैसे ही विचार शांत होते हैं,
स्पष्टता उभरती है।
जैसे ही भावनाएँ स्थिर होती हैं,
शक्ति स्थायी बन जाती है।
यह शक्ति प्रमाण नहीं माँगती।
वह दिखाई देती है—
धैर्य में,
संयम में,
शांत प्रतिक्रिया में।
धन्यवाद बाबा,
यह सिखाने के लिए
कि सच्ची शक्ति मौन में बढ़ती है,
और मौन मेरा सुरक्षित आश्रय बन जाता है।

मेरा मौन
स्थिरता ले आए,
आत्मविश्वास जगाए,
और शांत प्रभाव से भर जाए।
आपकी संतान,
मौन शक्ति में जड़ी हुई
ओम् शांति

मौन में जन्मी शक्ति
स्थिरता · संतुलन · आंतरिक सामर्थ्य
शांत प्रभाव · गहरी जड़ें
कार्ड #88 | मौन की शक्ति

आज मैं जैसी हूँ उससे नहीं,
जो मैं बन सकती हूँ— उसके लिए प्रेम।

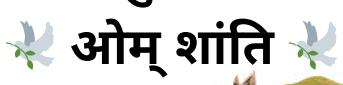
मेरे दूरदर्शी शिवबाबा,
आप मेरी वर्तमान अवस्था से आगे देखते हैं
और मेरे भविष्य स्वरूप को पहचानते हैं।

जहाँ मैं सीमाएँ देखती हूँ,
आप संभावनाएँ देखते हैं।
जहाँ मैं झिझकती हूँ,
आप शांत विश्वास रखते हैं।

आपका प्रेम

मुझे आज के लेबल से नहीं बाँधता,
वह उस रूप में निवेश करता है
जो मैं बन रही हूँ।
यह विश्वास मुझे उठाता है—
दबाव से नहीं,
आशा से।

धन्यवाद बाबा,
मेरी छिपी शक्तियों को देखने के लिए
और उन्हें कोमलता से जगाने के लिए।
क्योंकि आप मेरी संभावना देखते हैं,
मैं भी उसकी ओर चलना सीखती हूँ—
कदम-दर-कदम, विश्वास के साथ।

आपकी संतान,
आपकी दृष्टि के अनुसार विकसित होती हुई
 ओम् शांति

अंदर से स्थिर, चाहे बाहर कुछ भी हो।

मेरे स्थिर शिवबाबा,
दृश्य उठते-गिरते हैं,
राय बदलती हैं,
परिस्थितियाँ परखती हैं—
फिर भी आप मुझे भीतर से स्थिर कर देते हैं।

आपसे जुड़कर
मैं परिस्थितियों के साथ झूलती नहीं।

मैं देखती हूँ, समझती हूँ,
और केंद्र में बनी रहती हूँ।
यह स्थिरता जड़ता नहीं है;
यह शांत लचीलापन है—
बिना विचलित हुए प्रतिक्रिया देना,
बिना संतुलन खोए आगे बढ़ना।

धन्यवाद बाबा,
मुझे आत्म-अभिमान की चट्टान पर खड़ा करना सिखाने के
लिए,

ताकि लहरें आती-जाती रहें
पर मेरी स्थिति न हिले।

आपकी संतान,
परिस्थितियों से परे स्थिर
 ओम् शांति 

परिस्थितियों से परे स्थिरता

★ शांति · संतुलन · आंतरिक आधार ★

कार्ड #90 | अडिग आंतरिक स्थिरता

राजसी— बिना प्रदर्शन के।

मेरे राजयोगी शिवबाबा,
आपसे मैं ऐसी बादशाहत सीखती हूँ
जिसे किसी ताज की आवश्यकता नहीं।

मौन में
मेरी गरिमा ऊँची खड़ी रहती है।
विनम्रता में
मेरा अधिकार अनुभव होता है।
यह शांत राजाई
प्रतिक्रिया के स्थान पर धैर्य में दिखती है,
स्वीकृति की चाह के स्थान पर आत्म-सम्मान में,
दिखावे के स्थान पर स्थिरता में।

धन्यवाद बाबा,
मेरी आत्मा को
इस राजाई का वस्त्र पहनाने के लिए—
शांत आत्मविश्वास,
कोमल अधिकार,
और श्रेष्ठ जीवन-शैली।

मैं यह राजाई
हर विचार में,
हर वचन में,
हर कदम में धारण कर सकूँ—
कोमलता से, स्थिरता से, मौन में।

आपकी संतान,
शांत राजाई में स्थित
 ओम् शांति 

आत्मा की शांत राजाई

★ गरिमा • शांत अधिकार • सौम्यता ★
कार्ड #91 | मौन राजसी स्वरूप

इतना गहरा प्रेम कि भय स्वयं मिट जाए।

मेरे निर्भय बनाने वाले शिवबाबा,
आपकी उपस्थिति में
भय को कोई आश्रय नहीं मिलता।

आप मुझे साहसी बनने के लिए धक्का नहीं देते—
आप प्रेम से साहस जगा देते हैं।

जब मैं स्वयं को स्वीकारा हुआ,
संरक्षित और मार्गदर्शित महसूस करती हूँ,
मेरी चिंताएँ ढीली पड़ने लगती हैं।

यह प्रेम भय को धीरे-धीरे मुक्त करता है—
बलपूर्वक नहीं,
विश्वास दिलाकर।

यह जानकर कि आप मेरे साथ हैं,
मैं शांत मन से आगे बढ़ती हूँ,
आने वाले मार्ग पर भरोसा रखते हुए।

धन्यवाद बाबा,
भय को श्रद्धा में बदलने के लिए,
संदेह को शांत आत्मविश्वास में रूपांतरित करने के लिए।

आपकी संतान,
निर्भय होकर आगे बढ़ती हुई

ओम् शांति

शांत— जब सब कुछ गतिशील हो।

मेरे शांति-दाता शिवबाबा,
जब दुनिया भागती है,
आवाजें ऊँची होती हैं,
और दृश्य टकराते हैं—
तब आप मुझे स्थिरता में थाम लेते हैं।

आपसे जुड़कर
मैं घबराहट में नहीं बहती,
जल्दबाज़ी में प्रतिक्रिया नहीं देती,
बल्कि संतुलित बनी रहती हूँ।
अब अव्यवस्था मुझे बाहर नहीं खींचती;
शांति मुझे भीतर खींच लेती है।

उस शांत केंद्र से
स्पष्टता उभरती है
और सही कर्म सहज हो जाता है।

धन्यवाद बाबा,
हर तूफान में मेरी शांति बनने के लिए।

आपकी संतान,
गतिशीलता के बीच स्थिर

ओम् शांति

स्व-शासित— क्योंकि मैं आत्म-जागरूक हूँ।

मेरे स्वराज्यदाता शिवबाबा,
आपसे मैं स्वराज सीखती हूँ—

अपने विचारों,
भावनाओं
और कर्मों पर
कोमल अधिकार।

यह स्वराज दबाव से नहीं,
स्वाभाविक जागरूकता से आता है।

मैं दबाती नहीं—
समझती हूँ।

मैं दूसरों को नियंत्रित नहीं करती—
स्वयं को संचालित करती हूँ।

आपसे जुड़े रहकर
मेरी बुद्धि स्पष्ट रहती है,
मेरा हृदय संतुलित रहता है,
और मेरी प्रतिक्रियाएँ गरिमामय रहती हैं।

धन्यवाद बाबा,
भीतर के शासक को जगाने के लिए—

शांत, करुणामय
और सजग रूप से जिम्मेदार।
आपकी संतान,
स्वाभाविक स्वराज में स्थित

ओम् शांति

स्वाभाविक स्व-स्वराज्य

आत्म-नियंत्रण • संतुलन • आंतरिक अधिकार

कार्ड #94 | आत्म-जागरूक स्वराज

जहाँ कभी मैं आहत हुई थी, वहीं आपका प्रेम मुझे मिला।

मेरे उपचारदाता शिवबाबा,
कुछ घाव मौन थे,
कुछ भुला दिए गए थे,
कुछ बहुत समय से भीतर छिपे थे।
आप उन्हें फिर से नहीं कुरेदते—
आप धीरे से प्रवेश करते हैं,
समझ के साथ,
धैर्य के साथ,
प्रकाश के साथ।
आपके प्रेम में
दर्द का निर्णय नहीं होता,
स्मृतियों से प्रश्न नहीं किए जाते।
उन्हें बस थाम लिया जाता है...
जब तक वे नरम होकर
स्वयं मुक्त न हो जाएँ।
धन्यवाद बाबा,
मुझे बिना याद दिलाए,
बिना दबाव दिए,
बिना शब्दों के
उपचार देने के लिए।
आपकी उपस्थिति में
पुराने घाव भी
विश्राम करना सीख लेते हैं।
आपकी संतान,
आपके प्रेम में शांत उपचार पाती हुई

ओम् शांति

पुराने घावों को भरने वाला प्रेम
कोमलता · पुनर्स्थापन · आंतरिक सुकून
कार्ड #95 | जहाँ आघात था, वहाँ उपचार



प्रशंसा या निंदा

— भीतर समान

मेरे अडिग शिवबाबा,
जब शब्द ऊपर उठते हैं,
जब प्रशंसा ऊँचा उठाती है

या निंदा चुभती है—
आप मुझे याद दिलाते हैं
कि मैं वास्तव में कौन हूँ।

आपसे जुड़कर
मैं अपना मूल्य

दूसरों की राय से नहीं लेता/लेती।
मैं सुनता/सुनती हूँ, सीखता/सीखती हूँ,
और संतुलित रहता/रहती हूँ।
प्रशंसा अब मुझे मदहोश नहीं करती।
निंदा अब मुझे विचलित नहीं करती।

मेरा मूल्य स्थिर है
आत्म-स्मृति में।
धन्यवाद, बाबा,
मुझे प्रतिक्रियाओं से परे
शांत गरिमा

और स्थिर जागरूकता में स्थापित करने के लिए।

आपका बच्चा,
हर दृश्य में समान
ॐ शांति ॐ

अहंकार रहित अधिकार

मेरे परम अधिकारस्वरूप शिवबाबा,
आपसे मैं ऐसा नेतृत्व सीखता/सीखती हूँ
जिसमें कोई बोझ नहीं होता।
यह अधिकार न दबाता है,
न मांग करता है,
न स्वयं को सिद्ध करने में लगा रहता है।

यह बहता है
स्पष्टता से,
सत्य से,
और आंतरिक एकता से।

आपसे जुड़कर
मेरे शब्द दृढ़ होते हैं परंतु कोमल,
मेरे कर्म निर्णायिक होते हैं परंतु सहज।
अहंकार पीछे हट जाता है—

बुद्धि आगे बढ़ती है।

धन्यवाद, बाबा,
मुझे सिखाने के लिए

कि मैं बिना सिद्ध किए मजबूत खड़ा/खड़ी रहूँ,
बिना नियंत्रण किए मार्गदर्शन करूँ,
और बिना अहंकार के शासन करूँ।

आपका बच्चा,
शांत अधिकार में स्थिर

ॐ शांति ॥

प्रेम जो मेरी कहानी को नया रूप देता है

मेरे रूपांतरणकारी शिवबाबा,

मेरी कहानी के कुछ पृष्ठ

उलझन,

पीड़ा,

और सीमाओं में लिखे गए थे।

लेकिन आपका प्रेम कभी भी निर्णय के साथ संपादन नहीं करता—
वह ज्ञान के साथ नया लेखन करता है।

आपसे जुड़कर

मैं अब पुराने पात्रों

या बीते दृश्यों से बंधा/बंधी नहीं हूँ।

आप मुझे सिखाते हैं

जीवन को एक उच्च अर्थ से पढ़ना

और भविष्य को

साहस और स्पष्टता के साथ लिखना।

धन्यवाद, बाबा,

मुझे एक नई पटकथा देने के लिए—

जहाँ पछतावे की जगह सीख लेती है,

डर की जगह आशा लेती है,

और उलझन की जगह उद्देश्य लेता है।

आपके साथ,

मेरी कहानी आगे बढ़ती है—

और भी हल्की, सच्ची और स्वतंत्र।

आपका बच्चा,

नए लिखे हुए भाग्य को जीता/जीती हुआ/हुई

ॐ शांति ॐ

देखभाल — बिना उलझे हुए

मेरे बुद्धिमान शिवबाबा,
आप मुझे ऐसा प्रेम सिखाते हैं
जो चिपकता नहीं,
और ऐसा वैराग्य
जो दूरी नहीं बनाता।

आपके साथ,
मैं गहराई से परवाह करना सीखता/सीखती हूँ
बिना स्वयं को खोए,
कोमलता से सहारा देना
बिना भावनात्मक बोझ उठाए।

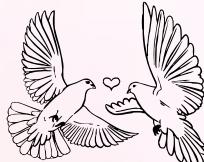
यह संतुलन मेरी शांति की रक्षा करता है
और मेरे प्रेम को सुरक्षित रखता है।

मैं उपलब्ध रहता/रहती हूँ,
फिर भी स्वतंत्र;
जुड़ा/जुड़ी हुआ/हुई,
फिर भी स्पष्ट।

धन्यवाद, बाबा,
मुझे यह दिखाने के लिए
कि समझ के साथ कैसे प्रेम किया जाए—
जहाँ भावनाएँ ज्ञान की सेवा करें
और देखभाल पवित्र बनी रहे।

आपका बच्चा,
स्वतंत्र और हल्के मन से प्रेम करता/करती हुआ/हुई

॥ ॐ शांति ॥



नेतृत्व जो भीतर से आरंभ होता है

मेरे परम मार्गदर्शक शिवबाबा,
आपसे

मैं ऐसा नेतृत्व सीखता/सीखती हूँ
जिसमें महत्वाकांक्षा नहीं,
और ऐसा प्रभाव
जिसमें बल प्रयोग नहीं।

यह नेतृत्व बहता है
आंतरिक स्पष्टता से,
आत्म-अनुशासन से,
और करुणा से।

अन्य लोग मार्गदर्शन महसूस करते हैं
केवल शब्दों से नहीं,

बल्कि कंपन से।
आपसे जुड़कर

मैं उदाहरण बनकर नेतृत्व करता/करती हूँ—
मूल्यों में स्थिर,
वाणी में कोमल,
सत्य में दृढ़।

धन्यवाद, बाबा,

भीतर के नेता को जागृत करने के लिए—

जो सेवा करता है,
उत्थान करता है,
और प्रेरित करता है

सिर्फ समन्वित होकर रहने से।

आपका बच्चा,

आत्मा के माध्यम से सहज नेतृत्व करता/करती हुआ/हुई

ॐ शांति ॐ



समापन पृष्ठ

यह पुस्तक यहाँ समाप्त नहीं होती।

आपने जो भी कार्ड पढ़ा है,

वह एक निमंत्रण था—

रुकने का,

महसूस करने का,

और याद करने का।

इस स्मृति को

अपने दैनिक क्षणों में साथ लेकर चलें—

अपनी साँसों में,

अपने कर्मों में,

अपनी शांति भरी चुप्पियों में।

जब भी आप बिखरा हुआ महसूस करें,

एक ही विचार में लौट आएँ:

“मैं आत्मा हूँ, और मैं अकेला/अकेली नहीं हूँ।”

शिवबाबा का प्रेम

आपकी शांत शक्ति बना रहे,

आपका स्थिर सहारा,

और आपका निरंतर साथी।

ॐ शांति

shivbaba311218@gmail.com



❤️ अपनापन

मेरे मधुर शिवबाबा,
आपसे प्रेम करना स्वाभाविक लगता है,
क्योंकि मैं आपका हूँ/हूँ।
इस अपनेपन में
मेरा हृदय विश्राम पाता है
और मेरी आत्मा मुस्कुराती है।
आप ही मेरे एकमात्र हैं —
और वही पर्याप्त है।
ॐ शांति ॥